Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम

A9c4

—बुद्धदेव
विद्यालङ्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म्

प्रारम्भिक निवेदन

गुरुकुल-विश्वविद्यालय ने मुझे वेद विषय पर व्याख्याता नियत करने का गौरव दे कर अनुगृहीत किया है। इस व्याख्यान-माला में सब से पहिले मैंने शतपथ ब्राह्मण के विषय में कुछ व्याख्यान दिये थे जो "शतपथ में एक पथ" नाम से पुस्तकरूप में प्रकाशित होगए हैं। उस के पश्चात् "आर्य्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब" ने वैदिक-अनुसन्धान-विभाग की स्थापना करदी। इस लिये मुझे अध्ययन करने के लिये कुछ अवकाश प्राप्त होने लगा। उसीके फल स्वरूप सोम, मरुत् तथा स्वर्ग इन तीन विषयों पर कुछ व्याख्यान मैंने इस वर्ष भी गुरुकुल में दिये जो आचार्य्य जी की कृपा से गुरुकुल की ओर से ही प्रकाशित हो रहे हैं। यदि मुझ इसी प्रकार अवकाश मिलता रहा तो मैं अन्य देवताओं के विषय में भी लिखूंगा; और कदाचित् अपने चिर-सङ्कल्पित शतपथ ब्राह्मण के भाष्य को लिखने में भी समर्थ हो सकूं। जब तक सोम, मरुत्, अग्नि, त्वष्टा, अश्विनौ, इन्द्र आदि देवता क्या हैं यह निर्णय न हो लेवे तब तक शतपथ ब्राह्मण की यज्ञ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रक्रिया समझ में नहीं आसकती। इसलिये मैं इन सब व्याख्यानों को शतपथ भाष्य की पूर्व्व पीठिका ही समझता हूं। इस व्याख्यान माला में से यह प्रथम पुष्प "सोम" परीक्षकों की सेवा में समर्पित है। इसे "मूर्द्धिन स्थिति" प्राप्त होनी है अथवा "चरणैरवताडनानि" यह तो वह शास्त्रज्ञ परीक्षक ही जानें। मैं तो चरणताडन से भी अनुगृहीत हो जाऊंगा।

—विनयावनत

गुरुकुल कांगड़ी
६ फाल्गुण १९८८

बुद्धदेव
विद्यालंकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोम

शतपथ ब्राह्मण तृतीय और चतुर्थ काण्ड में सोम याग का वर्णन है। उस में पहले आतिथ्य द्वारा सोम की महिमा बताई गई है। फिर पशुविधि द्वारा पशु से सोम कैसे बनता है यह बताया गया है। फिर उसके सवन द्वारा उसकी सेवन-विधि बताई गई है। पशुयागवादियों का प्रकृति याग होने के कारण यह आधार स्तम्भ है। आज हमें यह विचार करना है कि यह सोम वस्तुतः क्या है?

मध्यकालीन याज्ञिकों का कथन है कि यह एक वनौषधि विशेष है। परन्तु वैदिक मन्त्रों के आधार पर यह बात सिद्ध नहीं होती। प्रथम सोम की उत्पत्ति को ही लीजिये।

उपह्वरे गिरीणां सङ्गमे च नदीनां धिया विप्रो अजायत ॥

यजु० २६। १५ ॥

महीधरादि टीकाकारों के मतानुसार इसमें सोम का वर्णन है। प्रथम तो मन्त्र में सोम शब्द नहीं। दूसरे, यदि देवता के आधार पर इस में सोम का वर्णन है यह मान भी लिया जाय तब भी सोम का अर्थ वृक्ष-विशेष अथवा लता विशेष नहीं हो सक्ता। क्योंकि मूलमन्त्र में उसे विप्र कहा है और उस की उत्पत्ति धीः से बताई गई है। धीः के निघण्टु में दो अर्थ दिये गये हैं। "धीरिति कर्मनामसु पठितम्। धीरिति प्रज्ञानामसु पठितम्।" अर्थात् धीः के दो अर्थ हैं; कर्म और बुद्धि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों से ही वनस्पति की उत्पत्ति सम्भव नहीं। विप्र का अर्थ महीधर उव्वटादि भाष्यकार स्वयं मेधावी ऐसा करते हैं फिर न जाने कि सोम का अर्थ वनस्पति कैसे करते हैं?

ऋग्वेद का नवम मण्डल सारा ही पवमान सोम का वर्णन करता है। उस वर्णन से भी वनस्पति अर्थ की पुष्टि नहीं होती। नवम मण्डल के ११३ सूक्त में उस का वर्णन इस प्रकार किया गया है:—

आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात्सोम मीढ्वः।

ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परिस्रव ॥

ऋतं वदन् ऋत द्युम्न सत्यं वदन्त् सत्य कर्म्मन् धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परिस्रव ॥

ऋग्वेद मण्डल ९ सूक्त ११३ मन्त्र २ व ४ ॥

इन मन्त्रों में यह बताया गया है कि सोम का जन्म ऋतवाक सत्य और श्रद्धा द्वारा हुआ है। सोम का वर्णन इस प्रकार है। जिस के झण्डे पर ऋत अर्थात् ज्ञान लिखा हुआ है। जो सदा ऋत का उपदेश करने वाला है। सदा सत्य भाषण और सत्याचरण करता है। जिस की वाणी श्रद्धायुक्त है। इस प्रकार के गुणों वाले धाता से परिष्कृत हे राजन् सोम! हे इन्दो! अर्थात् आर्द्रहृदय! सोम! तुम इन्द्र की ओर बह निकलो अथवा सदा बहते रहो।

अब स्पष्ट है कि ज्ञान का उपदेश करने वाला ज्ञान का झण्डा फहराने वाला सत्यवादी तथा सत्यकर्मा वनस्पति कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो सक्ता। वह कोई विवेकशाली चेतन ही हो सकता है। अब हम यह दिखाना चाहते हैं कि वस्तुतः सोम क्या है? हमारी दृष्टि में सोम नाम गुरुकुल से विद्या समाप्त किये हुए अथवा अभी गृहस्थ में प्रविष्ट हुए स्नातक का है। इस स्थापना की पुष्टि के लिये हम प्रमाणों की शृङ्खला उपस्थित कर देते हैं। हम समझते हैं कि हमें उस पर टिप्पणी कोई नहीं करनी पड़ेगी। वह प्रमाण अपना अभिप्राय स्वयं ही प्रकट कर देंगे।

शूरः ॥ ऋग्वेद मण्डल ९ सूक्त ३ मन्त्र ४ ॥

स्वायुध (उत्तम शस्त्रों वाला) ऋ० ९। ४। ७ ॥

त्वां यज्ञैरवीवृधन् (तेरी यज्ञ के द्वारा वृद्धि की जाती है)

ऋ० ९। ४। ९

नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमाभर (हमें उत्तम धन और पूर्ण आयु दे) ऋ० ९। ४। १० ॥

सुष्वाणः। सुतः प्रत्नं निपाति काव्यं ॥

ऋ० ९। ६। ८

(वह स्वयं सुत है और सत्व खींच कर सनातन काव्य अर्थात् वेद वाणी की रक्षा करता है)

गुहा चिद्दधिषे गिरः ॥ ऋ० ९। ६। ९ ॥

(अपनी बुद्धि में अनेक वाणी धारण करता है)

स्पृधः अभिसीदति ॥ ऋ० ९। ७। ५ ॥

(युद्ध में शत्रुओं का मुकाबला करता है)

चमूषदः ॥ ऋ० ९। ८। २ ॥ (सेना में रहने वाले)

कविः .....सुवानः ..... कविक्रतुः ॥ ऋ० ९। ९। १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(नई २ बातें उत्पन्न करने वाला विद्वान् और विद्वानों के समान आचरण करने वाला)

स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् ।
महान्मही ऋतावृधा ॥ ३ ॥ ऋ० ९ । ९ । ३ ॥

वह ऐसा पुत्र है जिसने उत्पन्न होकर आप बड़प्पन प्राप्त किया और अपनी माननीय ज्ञान का विस्तार करने वाली, दोनों माताओं जननी और विद्या को स्वयं शुचि होकर अलंकृत किया।

इन्द्र युवानं इन्दुं तव व्रते आदधुः ॥ ऋ० ९ । ९ । ५ ॥

हे इन्द्र ! परमेश्वर अथवा राजन् ! युवा सोम को तेरे व्रतों के पूर्ण करने के लिये नियत किया गया है।

पुमन् सोम नः तमांसि योध्या । तानि पुनान जङ्घनः ॥
ऋ० ९ । ९ । ७ ॥

हे सोम ! तू बहादुर है। तू पुमान् है। हमें घेरने वाले अन्धकार के साथ लड़ता है और उसे बार २ नष्ट करता है।

नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः ।
प्रत्नवद्रोचया रुचः ॥ ८ ॥
पवमान महि श्रवो गामश्वं रासि वीरवत् ।
सना मेधां सना स्वः ॥ ९ ॥ ऋ० ९ । ९ । ८—९ ॥

हे सोम ! तू नई से नई विद्याओं के लिये रास्ता साफ कर और जैसे तुझसे पहिले विद्वानों ने उस रास्ते की शान बढ़ाई है वैसे तू भी बढ़ा । यहां वेद ने किस सुन्दरता से नई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नई खोज करने वाले विद्या के मार्ग में नया उत्साह बढ़ाने वाले स्नातक का स्वागत किया है। परन्तु साथ ही उसे यह भी सुझा दिया है कि अभिमान में भरकर कहीं प्राचीन विद्वानों का अपमान मत करना। उल्टा जितना उन्होंने किया है उसका आदर कर और अपना भी अनादर मत कर। उनकी जहां त्रुटियां रह गई हैं उनकी नई-नई खोजों से पूर्ति कर ज्ञान का रास्ता साफ कर। उसके रास्ते में रुकावट मत बन। पवमान तेरा यश बड़ा है अथवा तू बड़ा यश गौ, अश्व और पुत्र देने वाला है। हमें बुद्धि बांट और सुख बांट।

प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः।
सोमासो राये अक्रमुः॥ ऋ० ९। १०। १

ये सोम नाद करते हुए रथों के समान और चौकन्ने घोड़ों के समान चारों ओर धन की खोज में निकल पड़े हैं। "कारवः मतीनां द्वारा ऋण्वन्ति।" शिल्प विद्या के जानने वाले बुद्धि के द्वारा व्यवहार करते हैं। ऋ० ९। १०। ६॥

सोमाः ऋतस्य सादने सुता॥ ऋ० ९। १२। १॥
सोम ज्ञान के मन्दिर में उत्पन्न हुए हैं।
विचक्षणः सुक्रतुः कविः सोमः॥ ऋ०९। १२। ४॥
सोम उत्तम कर्म वाला विचक्षण और कवि है।
सुष्वाणं विप्रमभिगायत॥ ऋ० ९। १३। २॥
नई २ बातें खोजने वाले मेधावी सोम के गीत गाओ।
गृणानाः सोमाः पवन्ते॥ ऋ० ९। १३। ३॥
उपदेश देने वाले सोम संसार को पवित्र करते हैं।
ते देवासः नः सहस्रिणं रयिं पवन्ताम्॥ऋ० ९। १३। ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे देव सोम हमारे विपुल धन को पवित्र करें।

अपघ्नन्तोऽराव्णः योनौ ऋतस्य सीदत ॥ ऋ० ९।१३।९

शत्रुओं को मारते हुए सोम ज्ञान के घर में निवास करें।

एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः।

गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥ ऋ० ९ । १५ । १ ॥

यह शूर सोम अपनी सूक्ष्म बुद्धि और तीव्रगामी रथों के सहारे जीवन निर्वाह करता है और परमेश्वर अथवा राजा की ओर से कर्तव्य पालन करके ऋण से मुक्त होता है।

एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः।

पतिः सिन्धूनां भवन् ॥ ऋ० ९ । १५ । ५ ॥

जब यह वाजी अर्थात् वीर सेनापति बनता हुआ चलता है तो अनेक सुवर्ण सज्जित सिपाही इसके पीछे चलते हैं।

एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सप्त धीतयः।

स्वायुधं मदिन्तमम् ॥ ऋ० ९ । १५ । ८ ॥

दशों दिशाएं और सातों प्रकार की सेनाएं इस उत्तम शस्त्र धारी प्रजा के नेत्रोत्सव मदिन्तम सोम को यशोविस्तार द्वारा चमकाती हैं। यहां 'स्वायुधम्' शब्द ध्यान देने योग्य है। वनस्पति सोम शस्त्र कैसे धारण करता होगा यह बुद्धि के धनी पौराणिक भाष्यकार ही जानें।

तू मेधावी है। तू कवि है। तू अन्न से उत्पन्न हुआ मधु है। तू सर्व गुण सम्पन्न हर्ष का साधन है।

परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मती ॥ ऋ० ९ । २० । ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू अपनी बुद्धि से सब बातों का तत्व जानता है। और सब की बुद्धियों को पवित्र करता है। जो कदाचित् 'सोम अपने प्रभाव द्वारा औषध-रूपेण बुद्धि को निर्मल करता है' ऐसा अर्थ करना चाहते हों उनका मुह बन्द करने के लिये ही मानों वेद ने यहां 'चेतसा' पद रक्खा है। वनस्पति अपने चित्त से दूसरों की बुद्धि को कैसे पवित्र करेगी यह रहस्य भी कोई पौराणिक भाष्यकार ही खोलेगा।

एते स्वर्विदः सोमाः इन्द्राय धावन्ति ॥ ऋ० ९। २१। १

यह सुख का तत्व जानने वाले सोम इन्द्र की ओर दौड़ते हैं। पौराणिकों की वनस्पति दौड़ा भी करती हैं। हम साधारण-बुद्धि लोग तो उन्हें स्थावर ही समझते हैं।

एते सस्रुवांसो न शश्रमुः ॥ ऋ० ९। २२। ४॥

सोम उद्यम करते हुए नहीं थकते। वस्तुतः मूल में सृ गतौ धातु का सस्रुवांसः रूप पड़ा है। यह स्थावर वनस्पति में कैसे संगत होगा, यह विधाता ही जाने।

सोमा असृग्रम् विश्वानि काव्या। ऋ० २३ १.

सोमों ने सब काव्यों की रचना की। पूर्वजों के पद चिन्हों पर चलते हुए उन्होंने नया मार्ग ढूंढ निकाला है।

अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः ॥ ९. २३. २

सोम स्वयं मनुष्य हैं—

सोमास आयवः पवन्ते मदम्। ९. २३. ४

सोम मनुष्य हैं और हर्षकारक पदार्थों को पवित्र करते हैं।

आयु = मनुष्य। निघण्टु २ः ३.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमः सुवीरः । ६ २३.५

सोम एक उत्तम वीर है।

सोम नृभिर्विनीयसे । ६. २४. ३

हे सोम ! मनुष्य तुझे उत्तम शिक्षा देते हैं।

शुचिः पावको अद्भुतः उक्थेभिः पवस्व । ६.२४.६

हे सोम ! तू हमें अपने वचनोंसे पवित्र कर क्योंकि तू अद्भुत शुचि पावक (पवित्र करने वाला) है।

वृत्रहा कविः देवैः संशोभते । ६.२५ ३

सोम वृत्र का मारने वाला विद्वान् है जो देव मण्डली के साथ सुशोभित होता है।

उसका मार्जन पत्थर और सिलवट्टों से या कपड़े में छानकर नहीं हुआ।

तममृक्षन्त विप्रासः अण्व्या धिया । ६ २६.१

विद्वानों ने सूक्ष्म बुद्धि से उसे मांजा।

वाचः पतिम् सोमम् । ६.२६ ४

वह सोम वाणी का पति है।

विद्वज्जन स्वयं सोचें कि यह वृक्ष है या विद्वान् ?

एष विश्ववित् नृभिर्विनीयते । ६ २७. ३

इस विश्ववित् सकलकलाकोविद को विद्वान् मनुष्य वन में सुशिक्षित करते हैं।

विश्ववित् मनसस्पतिः । ६. २८. १

सोम सर्वविद्या निष्णात मानसिक शक्ति का पति है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरावृधं त्वा वेधसः हिन्वति ९. २६. ६

वाणी की वृद्धि करने वाले विद्वान् लोग तुझ को प्रेरणा करते हैं

एष वनेषु विनीयते ९. २७. ३

इस को वनों में शिक्षा दी जाती है

(गुरुकुल का कितना स्पष्ट वर्णन है !)

विश्ववित् मनसस्पतिः ९ २८. १

वसूनि सञ्जयन् ९. २९ ४

धन को जीतने वाले सोम !

स्वाध्यः सोमासः अक्रमुः चेतनं रयिं कृणवन्ति ९. ३१. १

स्वावलम्बी सोम विचरते हैं और ज्ञान देने वाला धन पैदा करते हैं ।

स्वायुधस्य ते सतो भुवनस्य पते वयम् इन्दो सखित्वमुश्मसि ।
९ ३१. ६

हे दयार्द्रहृदय सोम ! उत्तम शस्त्र धारण करने वाले भुवनों के पति ! आप की मित्रता हम सदा चाहें ।

वृक्ष शस्त्र धारण करें यह पौराणिक दल ही मान सकता है ।

स्वायुधस्य ते सतो भुवनस्य पते वयम् इन्दो सखित्वमुश्मसि
९ ३१. ६

हे उत्तम शस्त्र धारी भुवनपते दयार्द्र अथवा स्नेहार्द्र सोम ! हम तेरी मित्रता के लिये ललचाते हैं

अब विचारिये वृक्ष शस्त्र कैसे धारण कर सकते हैं ?

प्र सोमासो विपश्चितो अपां न यन्त्यूर्मयः ९. ३३. १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह विद्वान् सोम समुद्र की तरङ्गों की तरह आगे आगे बढ़ते जाते हैं

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम्
यथा ज्योतिर्विदासि नः ६ । ३५ । १

हे पवित्र करने वाले सोम ! हमारे धन को अपनी उस ज्ञान धारा से पवित्र कर जिस से वह ज्ञान हरण का साधन बनने के स्थान में हमें ज्ञान लाभ कराये।

इन्दो समुद्रमोङ्खय पवस्व विश्वमेजय शयो धर्त्ता न ओजसा । ६. ३५. २

हे वीररस सिक्त समुद्र को लांघ जा ; धरती को पवित्र कर ; धरती को कंपादे तूही अपने ओज से हमारी लक्ष्मी की रखवाली करने वाला है

त्वया वीरेण वीरवोऽभिष्याम पृतन्यतः ।
क्षरा णो अभि वार्यम् ॥ ६. ३५. ३ ॥

हे वीर तेरी वीरता हमें भी वीर बनाती है । तुझ से हम आक्रमणकारियों को काट गिरावें । हम पर वह वरणीय वीर रस बरसा ।

प्रवाजभिन्दुरिष्यति सिषासन्वाजसा ऋषिः ।
व्रता विदान आयुधा । ६. ३५. ४

यह वीर रस का ऋषि जब शत्रुओं के संहार का संकल्प करता है तो बड़े बांके जौहर दिखाता है । यह दो ही चीज़ जानता है; एक अपना कर्तव्य दूसरे अपना शस्त्र ।

तं गीर्भिर्वाचमीङ्खय पुनानं वासयामसि सोमं जनस्य गोपतिम् . ६. ३५. ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस जनता के भूमिपति इस वाणियों से वाणियों को पवित्र करने वाले सोम को हम निमन्त्रण देकर अपने घर में बसाएं।

विश्वो यस्य व्रते जनो दाधार धर्म्मणस्पतेः पुनानस्य प्रभूवसोः। ९. ३५. ६

जिस प्रभावशाली अथवा प्रभूतधनशाली जगत् को पवित्र करने वाले धर्म्म रक्षक सोम के कर्तव्य पालन के सिर पर सारा जन समुदाय खड़ा है।

हाय, क्या अब भी पौराणिक भाष्यकार देखेंगे कि यह वृक्ष नहीं है।

स वन्हिः सोम जागृविः पवस्व देववीरति. अभिकोशं मधुश्चुतम् ॥ ९. ३६ २

हे सोम तू सदा प्रजा के कल्याण के लिये जागता है। तू सारी प्रजा का भार सिर पर उठाए हुए हैं। अति देवपूजक तू हमारे आनन्द वर्षक कोश को पवित्र कर। यह जागरूकता वनस्पति में कैसे संघटित होगी?

विचक्षणः ९. ३७. २

वह सोम वस्तुओं के तत्व को खोल कर कहने वाला विद्वान् है।

परिष्कृणवन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः वृष्टिं दिवः परि स्रव। ९. ३९. २

हे सोम जिसका कोई उद्धार नहीं करता तू अपने नवीन उत्साह के कारण उनका भी परिष्कार (शुद्ध) करने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तय्यार हो जाता है। तू प्रजा की कामनाएं पूरी करने वाला है, प्रजा पर दिव्य वृष्टि बरसा।

समीचीना ऋतस्य योनौ सीदत। ९. ३९. ६

हे सर्वतोमुखी उन्नति करने वालो आओ। सोम आता है। इसके स्वागत के लिये तुम भी ज्ञान के आसन पर बैठो।

शुम्भन्ति विप्रम् ९ ४० १

मेधावी सोम को पवित्र करते हैं।

ध्रुवे सदसि सीदति। ९ ४० २

सोम अविचल सभा में बैठता है।

नः रयिं पवस्व ॥ ९ ४०. ३

हे सोम! हमारे धन को पवित्र कर।

विदाः सहस्रिणीरिषः ९ ४० ४

हे सोम! तू पुष्कल धन का मर्म जानता है।

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः। चरन्ति विद्युतो दिवि। ९. ४१. ३

बलवान् सोम का शब्द वृष्टि के शब्द के समान सान्त्वना देने वाला है, उसके आने पर बिजलियां चमकने लगती हैं।

तं गीर्भिर्वासयामसि ९. ४३ १

उस सोम को उत्तम प्रार्थना द्वारा अपने घर में बसाएं, अथवा उस सोम को उत्तम साहित्य ज्ञान से अनुवासित करें।

मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति, विप्रस्य धारया कविः। ९। ४४। २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुद्धियों का भण्डार कर्म्मों से प्रजा का सदा हित करने वाला अथवा उत्तम बुद्धि द्वारा प्रेरित सच्चा कवि सोम या मेधावी की धारा से अर्थात् ज्ञान की धारा से अल्पज्ञ लोगों का भी बड़े बड़े गहरे तत्वों के पार ले जाता है।

अयं देवेषु जागृविः ६।४४।२

सोम विद्वानों में जागरूक है।

विप्रवीरः सदावृधः ६. ४४. ५

सोम ऐसा ब्राह्मण वीर है कि अपने ज्ञान से कभी सन्तुष्ट होकर नहीं बैठता सदा आगे बढ़ने का यत्न करता रहता है—

एते सोमास इन्द्रं वर्धन्ति कर्म्मभिः ६. ४६. ३.

यह सोम अपनी कर्म्मपरायणता से इन्द्र को सदा बढ़ाते हैं।

अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत। ६. ४७. १

इन शुभ कर्म्मों से सोम ने अपना गौरव बढ़ाया है

कृतानीदस्य चेतन्ते दस्युतर्हणा। ६. ४७. २

इसके दुष्ट संहारकारी कारनामे दुनिया के लोगों को चेतावनी देते रहते हैं।

स्वयं कविर्विधर्त्तरि विप्राय रत्नमिच्छति यदीमर्मृज्यते धियः ६. ४७. ४

यह सोम निरन्तर अभ्यास द्वारा बुद्धियों का परिमार्जन करता रहता है और स्वयं (स्वभाव से) भी कवि है। अर्थात् इस में नैसर्गिक प्रतिभा और अभ्यासलब्ध परिष्कार दोनों हैं। अतः जो इस की मर्य्यादा को धारण करें उस अधिकारी मेधावी के लिये विद्या के छिपे रत्नों का भी प्रकाश करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तं त्वानृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः चारुं सुकृत्ययेमहे
९. ४८. १

हे द्यौः अर्थात् वानप्रस्थाश्रम के गौरव भूत मर्दानगी धारण करने वाला तू जब सभामण्डपों में आता है तो हम भी तुझ सुन्दर की सेवा में उत्तम कर्मों की भेंट लेकर आते हैं।

विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम्. गोपा मृतस्य . .
९. ४८. ४

सब को सच्चे सुख का दर्शन कराने के लिये ऊंच नीच भेद के भाव से शून्य साधारण प्रकाश फैलाने वाले ज्ञान-निधि के रक्षक सोम!

तया पवस्व धारया यथा गाव इहागमन् ९. ४९. २

हे सोम! उस धारा से हमें पवित्र कर जिस से यहां गौवें प्राप्त हों।

वनस्पति की धारा से गौवें कैसे आती हैं।

पवमानो असिष्यदत् रक्षांस्यप जङ्घनत् प्रत्नवद्रोचयन् रुचः
९. ४९. ५.

राक्षसों का विध्वंस करता हुआ पूर्वजों की भांति अपनी अवदान माला से जीवन मार्ग को आलोकित करता हुआ सोम सब पर वीर रस बरसाता है।

उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिवस्वनः।
वाणस्य चोदया पविम् ९. ५०. १

हे सोम! समुद्र की लहरों के नाद के समान तेरे बल का गम्भीर जय घोष उमड़ रहा है। तू अपने अस्त्रों का चक्र घुमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवे ६. ७०. ४

हे कवे ! सोम !

सनद्रयि भरद्वाजं नो अन्धसा। सुवानो अर्ष ६ ५२ १

धन को बांटने वाले अन्न द्वारा हमारे अन्दर बल भरने वाले सोम ! शास्त्रों का तत्व खेंच कर निकालता हुआ आ।

उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षोभिन्दन्तो अद्रिवः। नुदस्व याः परिस्पृधः ६. ५३. १

हे ! आदरणीय सोम राक्षसों का नाश करते हुए तेरे शूर कर्म संसार में उभर रहे हैं। उठ शत्रु सेनाओं को दूर हटा।

अया निजघ्निरोजसा रथसङ्गे धने हिते स्तवा अबिभ्युषा हृदा

६. ५३. २

हे सोम रथ की गोद में प्रजा का धन रख कर निर्भय हृदय से अपने ओज द्वारा शत्रुओं का हनन करता हुआ तू उत्तम स्तुति को प्राप्त होता है।

अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या। रुजयस्त्वा पृतन्यति

६, ५३. ३

इस पवमान की दुराधर्ष (व्रत) टेक को कोई नहीं टाल सकता। हे सोम ! उठ, जो तुझ पर आक्रमण करते हैं उन को बेहाल करदे।

अयं सूर्य्य इवोपदृगयं सरांसि धावति ६. ५४. २

यह सोम सूर्य्य के समान विश्व प्रकाशक है। यह ज्ञान के मार्ग में दौड़ता है अथवा सूर्य के समान ज्ञानोदक के जलद उत्पन्न करता है

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि सोमो देवो न सूर्य्यः ॥ ६ ५४. ३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सोम देव सूर्य्य के समान समस्त भुवनों के ऊपर अपनी पवित्र किरणों से पवित्र करता हुआ विराजमान है।

यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य स पवस्व सहस्रजित् ९. ५५ ४

यह वह सोम है जो शत्रुओं के सामने मैदान में जाकर सदा जीतकर आता है। कभी जीता नहीं जाता। इस प्रकार के हे सहस्रों को जीतने वाले सोम! तू हमें पवित्र कर।

त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परि स्रव नृन्स्तोतृन्पाह्यं-हसः। ९. ५६ ४

हे सोम तू हमारे राजा तथा हमारे संगठन के लिये सुखदायी होकर चारों ओर वीर रस बरसा। जो तेरी स्तुति करते हैं उन मनुष्यों को पाप से बचा।

अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति। हरिस्तु-ञ्जान आयुधा। ९. ५७ २

यह युवा सोम शस्त्र चमकाता हुआ आता है। परन्तु यह मत समझो कि यह केवल शस्त्रविद्या ही जानता है यह कवि सभा में भी मैदान मारना सीखा है। वहां भी सब को प्रिय काव्य सुनाता हुआ यह आता है।

पवस्व गोजिदश्वजिद्विश्वजित् सोम रण्य जित्। प्रजावद्रत्नमाभर ९. ५९. १

हे गोजित् अश्वजित् रमणीय धन जीतने वाले विश्वजित् सोम! हमें प्रजा के लिये कल्याणकारी रत्न प्रदान कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर। कविः सीद नि बर्हिषि। ९. ५९ ३

हे पवित्र करने वाले सोम ! तू हमें सम्पूर्ण दुष्टाचरणों से बचा। हे विद्वन् ! इस आसन पर बैठ।

प्रगायत्रेण गायत पवमानं इन्दु' सहस्र चक्षसम् ९ ६०.१

इस सहस्रों शास्त्र तत्वों का व्याख्यान करने वाले लोक-पावन सोम का विविध संगीत से स्वागत करो।

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः सखित्वमावृणीमहे
९. ६१. ४

हे संसार को रस से आर्द्र करने वाले सोम ! हम लोक-पावन तेरी मित्रता का आवाहन करते हैं।

पवमानो अजीजनत् ..... । ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ९. ६१. १६

पवमान सोम ने संसार भर के हित करने वाले विशाल ज्ञान।ज्योति के भण्डार को उत्पन्न किया।

पवमान रसस्तव दक्षो वि राजति द्युमान् ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे
९ ६१. १८

हे पवमान ! तेरा वह अद्भुत ज्योतिर्मय देदीप्यमान संसार की न्यूनताओं को पूर्ण करने वाला रस विराजमान है जिसके प्रताप से सारे संसार को सुख-तत्व-दर्शक ज्योति का लाभ होता है।

सोम व्रतेषु जागृहि ९. ६१. २४

हे सोम तू सदा अपने कर्तव्यों में जागरूक रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपघ्नन् पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम्। ९. ६१. २५

हिंसक शत्रुओं को नाश करता हुआ और इस प्रकार राजा के प्रति ऋण मुक्तता को प्राप्त होता हुआ सोम हमें पवित्र करता है।

महां नो राय आ भर पवमान जही मृधः। रास्वेन्दो वीरवद्यशः। ९. ६१. २६

हे रसवर्षिन्! हिंसकों को मार और हमें गौरवान्वित धन ला कर दे। वीरोचित यश को प्राप्त हो।

न त्वा शतंचन हु्तो राधो दित्सन्तमामिनन् यत्पुनानो मखस्यसे ९. ६१. २७।

हे सोम! जब तू पवित्र करता हुआ दान देने पर आता है तो सैकड़ों कुटिल गति दुर्जन भी तुझे तेरे सत्य सङ्कल्प से नहीं टाल सकते।

या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे।
रक्षा समस्य नो निदः ९. ६१. ३०

हे सोम! शत्रुनाश के लिये तेरे पास जो तीक्ष्ण भयङ्कर युद्धोपकरण हैं उनसे तू हमें समस्त आक्रमणों से बचा।

क्या वृक्ष भी शस्त्र लेकर लड़ते हैं?

विघ्नन्तो दुरिता ९. ६२. २

दुराचरणों को नाश करने वाले सोम!

त्वमिन्दो परिस्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः। वृतं पयः। ९. ६२. ९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सोम ! तू हम पर घी दूध बरसा।

क्या वृक्ष से घी दूध भी बरसता है ?

कविः ६. ६२. १४

गिरा जातः ६. ६२. १५

वाणी से उत्पन्न हुआ।

तं रथे युञ्जन्ति ऋषीणां सप्त धीतिभिः ६. ६२. १७

उस सोम को ऋषियों की सात छन्दोमय रस्सियों से रथ में जोतते हैं।

एते सोमा गृणानाः। ६. ६२. २२

यह शास्त्र तत्वों का कथन करते हुए सोम !

पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः, अभि विश्वानि काव्या ६. ६२ २५

साहित्य क्षेत्र में अग्रगण्य सोम तुम अपनी रक्षण शीलता से हमारे सम्पूर्ण काव्यों को पवित्र करो।

त्वं समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन्। पवस्व विश्व-मेजय। ६. ६२. २६

हे वाणियों को सन्मार्ग में चलाने वाले सोम हे वाग्मिवर तुम वाङ्मय समुद्र के जल को पवित्र करो, इसे हिला दो।

तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे। ६. ६२. २७

हे सोम यह सब भुवन तेरी महिमा बखानने के लिये खड़े हैं।

इन्द्रायेन्दु पुनीतनोग्रं दक्षाय साधनम्। ६. ६२. २८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस वीर सोम को जो कि चतुर राजा के उद्देश्यों को पूरा करने वाला उग्र साधन है, पवित्र करो।

पवमान ऋतः कविः ९. ६२. ३०

हे सोम ! तू ज्ञान मार्ग का कवि है।

एते असृग्रमाशवोति ह्वरांसि बभ्रवः सोमा ऋतस्य धारया। ९. ६३. ४

यह पवित्र लोक लोकान्तरों में घूमने वाले बभ्रु वर्ण तपस्वी सोम सब प्रकार की कुटिलताओं को सत्य की धारा से अतिक्रमण करते हैं।

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् अपघ्नन्तो अराव्णः।

सुता अनुस्वमा रजोऽभ्यर्षन्ति बभ्रवः। ९. ६३. ५-६

लोगों को शुभ कर्मों में प्रेरणा करने वाले इन्द्र के राज्य की वृद्धि करते हुए, सारे संसार को आर्य बनाते हुए, शत्रुओं का नाश करते हुए संसार के सारभूत तपोधूसर विद्वान् ब्राह्मण सोम अपने कार्यक्षेत्र में विचरते हैं।

एते धामान्यार्य्या शुक्रा ऋतस्य धारया वाजं गोमन्तमक्षरन्। ९. ६३. १४

यह देदीप्यमान सोम जिधर निकल जाते हैं उधर ही संसार को ज्ञान की धारा से ऐसा सींच जाते हैं कि वह सब देश आर्य्य तथा अन्न क्षीर परिपूर्ण हो जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविं मृजन्ति मर्ज्यं धीभिर्विप्रा अवस्यवः।
वृषा कनिक्रदर्षति। ९. ६३. २०

संसार को रक्षा चाहने वाले विद्वान् इस विद्वान् मार्जनीय अर्थात् शिष्य को अपनी बुद्धियों द्वारा ऐसा मांजते हैं कि वह मेघ के समान स्निग्ध गम्भीर निर्घोष करता हुआ संसार पर ज्ञानवृष्टि करने आता है।

वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया मती विप्राः समस्वरन्। ९. ६३. २१

इस ज्ञान वर्षी शुभकर्म प्रेरक सोम की मति को ब्राह्मण लोगों ने ज्ञान धारा से स्वर में मिलाया है।

अपघ्नन् पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः नुदस्वा देवयुं जनम्। ९ ६३ २४

हे सोम! तू हिंसकों को मारते समय भी पवित्र करता है अर्थात् उन का शुद्ध करना ही तेरा मारना है, क्योंकि तू हर्ष का विस्तार करने वाला है और क्रतुवित् अर्थात् कार्य मर्म्मज्ञ है। तू देवों की उपासना न करने वालों को सन्मार्ग में ला।

पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः। अभि विश्वानि काव्या। ९. ६३. २५

तेजस्वी, रस सिक्त, लोक पावन, सोम विविध काव्यों की रचना करते हैं।

पवमानस्य विश्ववित् प्र ते सर्गा असृक्षत सूर्य्यस्येव न रश्मयः। ९ ६४. ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे विश्ववित् पवमान तेरी रचनाएं सूर्य्य की रश्मियों के समान कर्म्म करती हैं।

हिन्वानो वाचमिष्यसि, पवमान विधर्मणि, अक्रान्देवो न सूर्य्यः। ६. ६४. ६

हे सोम! तू विधर्म्म अर्थात् धर्म्म हीन पर अपनी वाणी को प्रेरणा करता है। और इस प्रकार आक्रमण करता है जैसे सूर्य देव अपने विधर्म्मा अन्धकार पर आक्रमण करता है।

चेतनः प्रियः कवीनां। ६. ६४ १०

सोम चेतन है और कवियों का प्यारा है।

आयद् योनिं हिरण्ययमाशुर्ऋतस्य सीदति जहात्यप्रचेतसः। ६. ६४. २०

जिस समय सोम अपने ज्योतिर्म्मय ज्ञान के आसन पर बैठता है उस समय मूर्खों को पीछे फैंक देता है।

अभि वेना अनूषत इयक्षन्ति प्रचेतसः। मज्जन्त्यविचेतसः
६. ६४ २१

उस समय गुणशाली उसका अनुकरण करते हैं चतुर उस से सीखते हैं और मूढ डूबते हैं।

रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे। ६. ६४ २४

हे कविवर! मित्र अर्यमा वरुण सब तेरा रस पीते हैं।

त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वाचमिष्यसि इन्दो सहस्रभर्णसम्। ६. ६४. २५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सोम ! हे लोकपावन तू प्रज्ञा से देदीप्यमान सहस्रों का भरण करने वाली वाणी को प्रेरणा करता है।

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् महामिन्दुं महीयुवः। ६. ६५. १

इस रसार्द्र गौरवान्वित वीर्यवान्, अपने अपने सोम को कल्याण कामिनी बहिनें और पत्नियें उत्तम कर्म के लिये प्रेरणा करती हैं।

यदद्भिः परिषिच्यसे मृज्यमानो गभस्त्योः।

द्रुणा सधस्थमश्नुषे। ६. ६५. ६

जब समावर्तन संस्कार के समय अनेक घड़ों से स्नान करा कर लोग तेरे शरीर को मांजते हैं तब उत्तम पादुका धारण करके तू सभा मण्डप की ओर आता है।

यस्य वर्णं मधुश्चुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः।

इन्दुमिन्द्राय पीतये॥ ६. ६५ ८

जिसके मधुवर्षी लोक दुःखहारी ब्राह्मणादि वर्ण को अविदारणीय राजमुद्रादि चिन्हों द्वारा पहुंचाते हैं और इस प्रकार इस नवयुवक को राजा के राज्य में रसपान कराने के लिये राजा तक पहुँचाते हैं।

राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि अन्तरिक्षेण यातवे। ६. ६५. १६

यह मत समझो इन्द्र ही राजा है। सोम मन के राज्य में अधिकार रखने वाला राजा है। यह सब को पवित्र करता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्र अपने ऐश्वर्य से लोक यात्रा करता है यह सोम अपनी बुद्धि से प्रजा के कल्याणार्थ अन्तरिक्ष से जाने के लिये ढूंढा जाता है। अर्थात् लोग यह विद्या सीखने इसके पास आते हैं।

आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम् पान्तमा पुरुस्पृहम् ९. ६५. ३०

धीरगति से चलने वाले बुद्धिमान् वरणीय तुझ संसार की रक्षा करने वाले महान् उद्देश्य वाले ब्राह्मण को हम वरण करते हैं।

पवस्व विश्वचर्षणेऽभिविश्वानि काव्या। ९ ६६. १

हे विश्वदर्शिन्! हे सकल शास्त्र निष्णात! हमारी सब विद्या सम्बन्धी प्रवृत्तियों को पवित्र कर।

महां असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्द ओजिष्ठः युध्वा सञ्छश्वज्जिगेथ ९. ६६. १६

हे सोम! तू उग्रों में ओजस्वितम है। तू ज्येष्ठहै। तू जब लड़ने जाता है तो सदा जीत कर आता है।

य उग्रेभ्यश्चिदोजीयान् छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः भूरिदाभ्यश्चिन्महीयान् ९ ६६. १७।

जो सोम ओजस्वियों से बढ़कर ओजस्वी शूरों से बढ़ कर शूर और दानियों से बढ़कर दानी है।

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ९. ६६. २०

यह सोम सब का अग्रणी है। यह पांच जनों का अर्थात् सारी प्रजा का पुरोहित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचक्षणः ६ ६६ २३

वह सोम विचक्षण है।

पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ६. ६६ २४

पवमान सोम ने विशाल देदीप्यमान ज्ञानमय ज्योति को उत्पन्न किया है। वह कालेअज्ञानान्धकार को निरन्तर मारता है।

अयं सोमः कपर्दिने घृतं न पवते मधु आभक्षत् कन्यासु नः ६. ६७. ११

यह सोम हमारी कन्याओं में से किसी वृता द्वारा दिया हुआ मधु खाता है।

वह कन्या इस को इस प्रकार मधु देती है जैसे अग्निको घृत दिया जाता है

यत्ते पवित्र मर्चिष्यग्ने तेन पुनीहि नः।

ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ६. ६६. २३-२४

हे विद्वदग्रगण्य सोम ! तेरे अन्दर अग्नि की ज्वालाओं के समान जो पदार्थ है उससे हमें पवित्र कर। हमें वेद के तत्वों से पवित्र कर।

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः

६ ६६. २५

हे विद्या का तत्व खेंच कर निकालने वाले तू ! हमें सब प्रकार से पवित्र कर और पवित्र विद्याओं का निचोड़ भी निकाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा ९. ६७ २७

विद्वज्जन मुझे पवित्र करें, वसु ब्रह्मचारी मुझे बुद्धि से पवित्र करें सब सज्जन मुझे पवित्र करें। सब सज्जन मुझे पुनीत करें और हे अन्तर्य्यामिन्! तू भी मुझे पवित्र कर।

उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुती वृधम्।
अगन्म विभ्रतो नमः ९. ६७ २९

यह जो सभामण्डप में आज सोम आया है इस ने हमारे यज्ञ में आहुति बढ़ाई है। इस के आने से हम में नवीन जोश का सञ्चार होगया है। यह बारम्बार हमारी स्तुति कर रहा है। इस विनीत युवा के सामने हम भी नमस्कार करते हुए आते हैं।

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे
९. ६८ १

यह रसार्द्र स्नातक लोग मधु के भरे हुए दूधभरी गौवों के समान परमात्मा अथवा राजा को ओर बहते हैं। साथ ही उत्तम आसनों पर बैठकर लोगों के अन्तर्मल क्षालन करने वाले वचनों को यह वचनवित् इस प्रकार झरते हैं जैसे दूधभरी गौके ऊध से दूध बरसता है।

संदक्षेण मनसा जायते कविर्ऋतस्य गर्भो निहितो यमा परः
यूना ह सन्ता प्रथमं विजज्ञतु र्गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम्
९. ६८. ५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह विद्वान् माता के गर्भ से उत्पन्न नहीं हुआ। यह ज्ञान रूप गर्भ में था और यम अहिंसादि सच्चे नियमों में तत्पर था।

केवल यह युवा पुरुष ही इस प्रकार नहीं उत्पन्न हुआ किन्तु युवक और युवति दोनों का ही जन्म इस प्रकार होता है अर्थात् कन्या भी इस प्रकार जन्म लेती हैं। इन का प्रथम अर्थात् मुख्य जन्म तो यही है जो इन्हें युवावस्था में मिला है। किन्तु मूर्ख लोगों की दृष्टि से यह छिपा हुआ उनके सामने तो यह अधूरा मां के गर्भ से जन्म पड़ा हुआ है।

अन्ये वधूयुः पवते परित्वचि श्रथीते नप्तीरदितेऋृतं यते
हरिरक्रान् यजतः संयतो मदो नृम्णाशिशानो महिषो न शोभते
९ ६९ ३

यह वधूयु सोम जो वल्कल वस्त्रों में शिथिलता दिखाता है अर्थात् वृक्षों की छाल का वस्त्र उतरता है यह भी भोग कामना से नहीं किन्तु लोक रक्षा के लिये यह दो पदार्थों को प्राप्त होता है एक गौओं को एक अखण्ड विद्या के मर्म्म को। यह शत्रुसंहार कर्त्ता उन पर आक्रमण करता है

यह यज्ञ शील संयमी तथा सब को प्रसन्न करने वाला है। यह धन दान करता हुआ राजा के समान शोभा पाता है।

उक्षा मिमाति प्रतियन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम्। ९ ६९ ४

यह वीर्य सेचन समर्थ सोम जब लोक में आता है। तो अनेक गुण निधान युवतियां उसकी ओर आती हैं और इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार उसकी कामना करने से वह देवियां परमात्मा के ऋण से मुक्त होती हैं।

यूयं सोम पितरः ६. ६६. ८

हे सोम! तुम गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के कारण पितर हो।

चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत।
६ ७०. १

यह सोम जब विद्याभ्यास कर के ज्ञान द्वारा बढ़ता था उस समय इसने चार आश्रम और के और बना दिये अर्थात् उनमें बड़ा परिवर्तन पैदा किया किन्तु वह परिवर्तन अधोगति की ओर न था। इसने सब आश्रमों को सुन्दर बना दिया।

नावा न सिन्धुमतिपर्षि विद्वान्। ६. ७०. १०

हे सोम! तू विद्वान् है तू हमें ऐसे पार लगाता है जैसे मल्लाह नाव द्वारा नदी से पार लगाता है।

पितुरेति निष्कृतम् ६ ७१. २

वह सोम पितृऋण से छूटता है।

वेपते मती। ६. ७१. ३

बुद्धि को हरकत देता है।

मूर्धन्श्रीणन्ति। ६ ७१ ४

उसके मस्तिष्क को परिपक्व करते हैं।

दिवः कविः......सहस्रणीतिर्यतिः। ६. ७१. ७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह दिव्य कवि है, यति है और सहस्रों कठिन उलझनों में से पार ले जाने वाला है।

रुक्रं द्रप्सस्य धमतः समस्वरन्नृतस्य योना समरन्त नाभयः।
सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन्। ६. ७३. १

सोम जब सत्य के मन्दिर में प्रवेश करता है और सत्य के प्रेम में उसके ओंठ फड़कते हैं, छाती उभरती है उस समय चारों ओर बैठने वाले सोम प्रसन्न होते हैं। और सत्य की नौकाएं शुभकारी प्रजावर्ग को पार उतारने लगती हैं।

सम्यक् सम्यञ्चो महिषा अहेषत सिन्धोरूर्मावधिवेना अवीविपन् मधोर्धाराभिर्जनयन्तो अर्कमित् प्रियामिन्द्रस्य तन्वम-वीवृधन्। ६. ७३. २

महनीय सम्यग्दर्शी विद्वानों ने इस को समीचीन मार्ग में प्रेरित किया है। उन्होंने इसे इतनी शक्ति दी है कि वह समुद्र की लहरों में खड़ा होकर स्वयं न कांपे किन्तु इन को कंपादे। इन विद्वानों ने मधु धाराओं से इस विद्वान् को उत्पन्न किया है। इस को देखकर राजा फूला नहीं समाता। यह सोम अथवा स्नातक उत्पन्न होना सहज नहीं, क्योंकि यह उस के प्रिय यशः शरीर को बढ़ाते हैं।

पवित्रवन्तः परिवाचमासते पितैषां प्रत्नो अभि रक्षति व्रतम् महः समुद्रं वरुणस्तिरोदधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम्
६. ७३. ३

इनकी वाणी के चारों ओर पवित्र वाणी वाले निवास करते हैं। इन का मान्य वृद्ध पिता भी अपने व्रत की रक्षा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता है, विशाल अथाह संसार के समुद्र से राजा इनको बचाता है तब धीर लोग अपने आश्रमों में यह महा-समारम्भ पूरा करने में समर्थ होते हैं।

सहस्र धारेऽव ते समस्वरन् दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः अस्य स्पशो न निमिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः।
९ ७३. ४

वह विद्वान् गुरु लोग वानप्रस्थाश्रम के सुखधाम में मधुजिह्व और संग वर्जित होकर इनपर सहस्र धाराओं से बरसते हैं। उधर राजा के गुप्तचर भी एक पलभर नहीं झपकते। पग पग पर इनके धर्म व्यतिक्रमपर पाश लेकर बांधने के लिये खड़े हैं। इस प्रकार सोम बनते हैं।

पितुर्मातुरध्या ये समस्वरन् ऋचा शोचन्तः सन्दहन्तो अव्रतान् इन्द्रद्विष्टामप धमन्ति मायया त्वचमसिक्नीं भूमनो दिवस्परि। ९. ७३. ५

माता पिता के पीछे उनके अधिकार में स्थित होकर ऋचाओं से देदीप्यमान व्रतहीनों को भस्म करते हुए यह सोम अपनी बुद्धि से धरती और आकाश पर से काली (प्रभु को बुरी लगने वाली पाप की) खाल को उधेड़ फैंकते हैं।

सहस्रधारे वितते पवित्र आवाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः। रुद्रास एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वञ्चः सुदृशो नृचक्षसः। ९ ७३ ७

अपने धर्म प्रचार रूप विस्तृत सहस्र धारयज्ञ में यह मन के राजा विद्वान् लोग संसार की वाणी को पवित्र करते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं राजा के सेनापति भी इनके हित चिन्तक हैं और राजा के मनुष्य परीक्षक सूक्ष्मदर्शी गुप्तचर भी इन का बड़ा आदर करते हैं।

ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे
विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्यवा जुष्टा न्विध्यति कर्त्ते अव्रतान्
९. ७३. ८

यह सत्य का रक्षक सुकर्म्मा सोम किसी से दबता नहीं उस के हृदय में ऋग्यजुः साम रूपा पवित्र त्रयीविद्या है। यह विद्वान् सब लोगों की पड़ताल करता है और व्रत हीनों को, अकर्म्म जुष्टों का कर्तव्य पालन के लिये कठोर चोट लगाता है।

ऋतस्य तन्तुर्वितत: पवित्र आ जिह्वाया अग्रे ९, ७३, ९

इस सोम की जिह्वा के अग्रभाग में पवित्र ज्ञान का तन्तु विस्तीर्ण है।

ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं नाम तृतीयमधि रोचने दिवः।
९. ७५. २

यह सोम ज्ञान की जिह्वा है। वह मधुर तथा प्रिय वाणी बोलने वाला है वह अदम्य वाचस्पति है। अब तक लोग माता को पति के नाम से अर्थात् अमुक की पत्नी कह कर याद करते थे और पिता को अमुक पत्नी का पति यथा "सीतापति" ऐसा कह कर याद करते थे किन्तु इसने अपने गुणों के कारण उनका एक तीसरा आदर सूचक नाम उत्पन्न किया है। वह यह कि लोग अब उन्हें अमुक के पिता वा माता कह कर याद करते हैं। इस सोम ने संसार के हृदय को इतना मोह लिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वः सिषासन्रथिरो गविष्टिषु
इन्द्रस्य शुष्म मीरयन्नपस्युभिरिन्दु र्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः
९. ७६. २

वह सोम शूरों की भाँति भुजाओं में शस्त्र धारण करता है वह यात्राओं में रथारूढ़ होता है जो प्रजा को सुख बांटने के लिए राजा को बलवान् बनाने के अभिलाषी कर्मयोगी विद्वान् उसका आदर करते हैं।

विश्वस्य राजा पवते स्वर्दृश ऋतस्य धीतिमृषिषाडवीवशत्

पिता मतीनामसमष्ट काव्यः ९. ७६. ४

यह सोम सब का राजा है सब को सुखदर्शन कराने के लिए सब को पवित्र करता है। ऋषियों में श्रेष्ठ है इस लिये ज्ञान का पान सदा चाहता है। बुद्धियों का पिता है और इस का ज्ञान अनभिभूत है।

विद्वान् ९. ७७. ४

राजा ९. ७८ १

नृचक्षाः कविः ९. ७८. २

मनुष्य परीक्षक विद्वान्

शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना ९. ८१. ३

हे सोम! आयु को बढ़ाने वाले सोम उत्तम चेतावनी से राष्ट्रवासियों को शिक्षा दें।

पज्राया गर्भ शृणुहि ब्रवीमि अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसेऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि ९. ८२. ४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे वाग्देवता के पुत्र ! सुन, मैं तुझ से कहता हूँ तू वाग्मियों के अन्दर निःशङ्क घूम, हमें जीवन देने के लिए घूम । हमारे शत्रुओं के प्रति सदा जागरूक रह ।

पवस्व सुविताय नव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते ६. ८५. ५

पूर्व के विद्वानों की भांति नवीन समस्याओं को सुन्दरता से सुलझा । क्योंकि तेरे व्रत पालन का अनुकरण सारी प्रजा करती है ।

ब्रह्मणस्पते ६. ८३. १

राजा ६. ८२. ५

स्वर्वित् ६. ८६. ३

परमसुख का जानने वाला ।

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः व्यानशिः पवसे सोम धर्म्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ६. ८६. ५

हे सकल शास्त्रज्ञ सोम ! महा शक्तिशाली तेरे झण्डे सब धामों में फहरा रहे हैं। हे व्यापक पाण्डित्य वाले तू अपने धर्म्माचरणों से संसार को पवित्र करता है अतएव तू भुवनपति होकर विराजमान है ।

स्वायुधः वाचो अग्रियो गोषु गच्छति ६. ८६. १२

यह सोम गोपति है । किन्तु इसका अर्थ बैल न समझना किन्तु वह वाग्मिश्रेष्ठ है इसलिए वाङ्मयों में विचरता है वह उत्तम शस्त्र वाला है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवे ९. ८६. १३

कविः ९. ८६ः २०

नृचक्षा ९. ८६. २३

मनुष्य परीक्षक विद्वान् विचक्षण

विश्वाभिर्मतिभि परिष्कृतम् ९. ८६. २४

सब विद्याओं से परिष्कृत सोम

ऋतस्य योना महिषा अहेषत । ९. ८६. २५

महनीय विद्वानों ने तुझे सत्य के घर में भेजा।

विश्वानि कृण्वन् सुपथानि यज्वने कविः ९ ८६. २६

यज्ञ करने वालों के लिये सम्पूर्ण सन्मार्ग उत्पन्न करने वाला विद्वान्।

विश्ववित् ९. ८६. २९

सकल शास्त्रज्ञ ।

स सूर्य्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुपयाति निष्कृतम्। ९. ८६. ३२

यह सोम ऐसा देदीप्यमान ब्रह्मचारी है मानों सूर्य्य की रश्मियों से परिवेष्टित है, इसने त्रिवृत् तन्तु अर्थात् यज्ञोपवीत सूचित आश्रम त्रय बन्धन को इसलिये धारण किया है जिससे इसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो। यह नित्य ज्ञान मार्ग को नित्य नई से नई प्रशंसित भूमिका में ले जाता है और इस प्रकार अपनी जन्मदात्री प्रजाओं के ऋण से मुक्त होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृचक्षा । ६. ८६. ३८
मनुष्य परीक्षक ।

रेतोधाः सुवीरः विश्ववित् । ६. ८६ ३६
वीर्य धारण करने वाला सुवीर सकल शास्त्रज्ञ ।
ब्रह्म प्रजावद्रयिमश्वपस्त्यं इन्द्रमस्मभ्यं याचतात् ।
६. ८६. ४१

विद्या धनयुक्त सन्जा, घोड़े, घर, यह सब हे सोम ! तू हमारे लिये इन्द्र से मांग ।

स्वायुधः । ६. ८७. २.
उत्तम शस्त्र वाला
ऋषिर्विप्रः पुरएता जनाना मृभुर्धीर उशना काव्येन ।
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम् ।
६. ८७. ३

वह सोम ऋषि है, विप्र है, जनता का नेता है, प्रबल दीप्तिमान् है, और धीर है । काव्य से सब का मन हर लेने वाला है ; वही इन वाणियों का जो बुद्धि में गूढ़ आदरणीय रहस्य है उसे जानता है ।

भूरिदावा । ६. ८७. ४.
बहुत दान शील
राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरं तव धाम सोम ।
६. ८८. ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सोम राजा वरुण के समान तेरे कठोर व्रत हैं तेरी पदवी गम्भीर और बड़ी है।

सहस्रधारो असदन्न्यस्मे मातुरुपस्थे वन आ च सोमः।
९. ८९. १

यह सहस्रधार सोम मां की गोद में और वन में (गुरुकुल में) दोनों में विराजमान होता है।

इन्द्रं गच्छन् आयुधा संशिशानो विश्वावसु हस्तयोरादधानः।
९. ९० १

यह सोम राजा की सेवा में अपने शस्त्र चमकाता हुआ अथवा सकल रत्नों की भेंट हाथों में लेकर उपस्थित होता है।

वना वसानः। ९. ९०. २.

बनवासी सोम।

शूरग्रामः सर्ववीरः साहवाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाढः साह्वान् पृतनासु शत्रून्॥
९. ९०. ३

शूरों के जत्थे के बराबर बल वाला। अप्रतिम वीर, सहनशील, जेता, धन का यथा योग्य बांटने वाला। तीव्र शस्त्र-धारी अस्त्रों का शीघ्र प्रयोग करने वाला जो युद्धों में शत्रुओं की चोट सहारता है पर जिसकी चोट कोई नहीं झेल सकता इस प्रकार गुण युक्त हे सोम! तू हमें पवित्र कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरुगव्यूति रभयानि कृएवन् समीचीने आपवस्वा पुरन्धी।
९. ९०. ४

हे सोम ! तेरी मार दूर तक है परन्तु तेरी क्षमा भी दूर तक है। युद्ध में तू शत्रु मित्र दोनों स्त्रियों को, यदि वह उल्टा मार्ग ग्रहण न करलें अर्थात् यदि वह युद्ध में मारने न आवें पवित्र कर। तू सब को अभय दान देने वाला है।

एवा राजेव क्रतुमाँ अमेन विश्वा घनिघ्नदुरिता पवस्व।
इन्दो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।
९. ९०. ६

यज्ञशील राजा की भांति अपने अप्रतिम बल से दुराचार का नाश करता हुआ हे सोम तू पवित्र कर।

हे रसार्द्र ! उत्तम सूक्तियों के मार्ग में तू अपना जीवन लगा और इस प्रकार कल्याण कर्म्मों द्वारा तुम सब स्नातक लोग हमारी रक्षा करो।

वचोवित् । ९. ९१. ३
वाक्य तत्वज्ञ।

स प्रत्नवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः
९. ९१. ५.

हे सर्वप्रिय अथवा सर्व हितकारिन् ! तू पूर्वगामियों की तरह नवीन तथा नवीनतर सूक्तों के लिये अग्रगामी मार्ग बना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वेषु काव्येषु रन्ता। ६. ९२. ३

सब ज्ञानचर्चाओं का आनन्द लेने वाला।

कविः। ९. ९४. ३

सीदन् वनस्य जठरे। ९. ९५. १

वन के बीच बैठा हुआ।

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्त्ति वाचमरितेव नावम्।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे॥
९. ९५. २

यह तमःसंहारी सोम ज्ञान का मार्ग बनाता हुआ वाङ्मय की गति को इस प्रकार ले जाता है जैसे मल्लाह नाव को। उत्तम व्याख्यान आसन पर समझदार श्रोता के लिये बैठ कर यह विद्वान् देवों के गुह्य रहस्य प्रकट करता है।

प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना।
९ ९६ १

यह शूर सेनापति युद्ध में रथों के आगे नाद करता हुआ जब जाता है तो उस समय इस की सेना प्रसन्न होती है।

विद्वान्। ९. ९६. २

जनिता मतीनां। ९. ९६ ५

नई नई बुद्धि का जन्मदाता।

ऋषिर्विप्राणां। ९. ९६. ६

ब्राह्मणों में वह ऋषि पदवी के योग्य है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवीविचद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिरः सोमः पवमानो मनीषाः

९. ९६. ७

पवमान सोम वाणी और बुद्धियों को पवित्र करता हुआ समुद्र की तरह वाङ्मय समुद्र में लहरें उभार देता है, अर्थात् हलचल पैदा कर देता है।

जनयायुधानि। ९. ९६ १२

हे सोम तू आयुध (शस्त्रास्त्र) उत्पन्न कर।

स्वायुधः। ९. ९६. १६

उत्तम शस्त्रवाला।

कविर्गीर्भिः काव्येना कविः। ९. १६ १७

सोम वाणी और ज्ञान दोनों से कवि है।

ऋषिमना ऋषिकृत् सहस्रणीथः पदवीः कवीनां। ९. १६. १८

ऋषियों के मतवाला ऋषि उत्पन्न करने वाला सहस्रों मार्गों का नेता कवियों का आदर्श जिसके पद चिन्हों पर कवि चलें।

साम कृण्वन् सामन्यः ९. ९६. २२

सङ्गीतज्ञ गीतकार।

भद्रा वस्त्रा समन्या वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।

आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ

९. ९७ २

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्तम सभा योग्य अथवा संग्राम योग्य वस्त्र धारण करता हुआ उत्तम वचन सुनाता हुआ विचक्षण महाकवि सोम सभा और सेना अर्थात् ब्रह्म युद्ध और क्षत्र युद्ध दोनों प्रकार की सेनाओं में देवरक्षार्थ सदा जागरूक होता हुआ शौर्य्य से पूयमान होकर प्रशंसा को प्राप्त हो।

महिव्रतः शुचिबन्धुः । ६. ९७. ७

पूज्य व्रतधारी पवित्र बन्धुओं वाला।

वृषाशोणो अभिकनिक्रदद्गा नदयन्नेति पृथिवीमुत द्याम्
इन्द्रस्येव वग्नु राशृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाच मेमाम्।
६ ९७ १३

ज्ञानवर्षी ब्रह्मचर्य्य के प्रताप से लाल मुखवाला धर्म के प्रचारार्थ गम्भीर गर्जना करता हुआ आकाश तथा पृथिवी को गुँजाता हुआ इस पवित्र वेदवाणी को सब को खोल कर समझाता हुआ यह सोम जब धर्म विवादों में जाता है उस समय इसका नाद राजा अथवा मेघ के नाद के समान सुनाई देता है।

एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन् वधस्नैः।
परिवर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः॥
६. ९७. १५

हे सोम! इस प्रकार सकल लोकानन्दवर्धन तू प्रतिपक्षियों को आयुधों से नतमूर्धा करता हुआ वाचस्पति होकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे आनन्द के लिये पवित्र बन और विद्या से भली प्रकार ज्ञान करके हमारे पास आ।

दुरितानि विघ्नन्। ६. ६७. १६

दुराचरणों को नाश करता हुआ।

ग्रन्थि न विष्य ग्रथितं पुनान ऋजुञ्च गातुं वृजिनञ्च सोम अत्यो न क्रदो हरिरासृजानः मर्यो देव धन्वपस्त्यावान्। ६. ६७. १८

हे गृहस्थ मनुष्य देव सोम तू ऋजु तथा कुटिल दोनों मार्गों को पवित्र करता हुआ गाँवों के समान कठिनाइयों को काट। तू हमारे पास पाप-संहार के लिये परिव्राजक के समान होकर हममें पूरी तरह मिलता हुआ हमें उपदेश कर।

नृचक्षा। ६. ६७ २४

मनुष्य परीक्षक।

जागृविर्विप्रः। ६. ६७ ३७

सदा जागरूक मेधावी।

अभिश्रीणन् पयः। ६ ६७. ४३

दूध पकाता हुआ।

सत्यमन्मा। ६ ६७. ४८

सत्य का मनन करने वाला।

अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्ष। ६. ६७. ५०

उत्तम वस्त्रों को प्राप्त हो जो पहिनने में सुन्दर हों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्ववित् मनीषी । ६. ९७. ५६

सकल शास्त्रज्ञ बुद्धिमान् ।

धियः पतिः । ६. ६६. ६

बुद्धि का स्वामी ।

मनोयुजं धियं सृज । ६. १००. ३

मन को एकाग्र करने वाली बुद्धि बना ।

महिव्रत । ६. १००. ६

महान् व्रत वाले ।

वाचस्पति । ६. १०१. ५

सोमासः कृण्वते पथः । ६. १०१. ८

सोम लोगों के लिये मार्ग बनाते हैं ।

यमी ऋतावृधः – चारुमजीजनन् कविं । ६. १०२. ६

ज्ञानवर्धक लोगों ने उस सुन्दर कवि को उत्पन्न किया ।

परि रोता मतीनां । ६. १०३. ४

बुद्धियों का दूल्हा ।

सं वत्स इव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते देवावीर्मतिभिः परिष्कृतः ६ १०५. २ ।

यह हर्षकारी सूक्ष्म बुद्धियों द्वारा परिष्कृत देव रक्षक सोम गुरुओं की आज्ञा से प्रेरित होकर अपनी माताओं अर्थात् घर की देवियों से इस प्रकार मिलता है जैसे बिछुड़ा हुआ बछड़ा गौ से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागृविः ६. १०६ ४

सदा जागरूक।

विश्वदर्शतः पथिकृत् विचक्षणः ६. १०६. ५।

विश्वदर्शी मार्गदर्शक विद्वान्।

धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीडन्तम् ६ १०६. ११

वन में खेलते हुए इस बलवान् को बुद्धियों से प्रेरणा करते हैं।

वाचं जनयन् ६. १०६. १२.

उत्तमवाणी उत्पन्न करता हुआ।

विचक्षण ६. १०७. ३।

जागृविः विप्रः ६. १०७. ६

ऋषिर्विप्रः विचक्षणः कविः ६. १०७. ७

कविः ६. १०७. १८

पवस्व विश्वानि काव्या ६. १०७. २३

सम्पूर्ण काव्यों को पवित्र कर

स तू पवस्व पार्थिवं रजो दिव्या च सोम धर्म्मभिः त्वां विप्रासो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः ॥ २४

हे सोम! तू दिव्य और पार्थिव दोनों लोकों को धर्माचरणों से पवित्र कर। हे विचक्षण! मेधावी लोग अपनी सुमति देकर तुझ शुभ्र को सन्मार्ग में प्रेरित करते हैं।

त्वं ह्यङ्ग दैव्या पवमान जनिमानिद्युमत्तमः अमृतत्वाय घोषयः ६. १०८. ३।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे पवमान देदीप्यमानतम ! देव लोग कैसे जन्म लेते हैं यह लोगों को अमृतत्व की प्राप्ति के लिए तू घोषित करता है ।

सुदत्तः ६. १०८. १०

स्वायुधः ६. १०८. १५

इन्द्रस्य हार्दिं सोमधानम् । ६, १०८, १६

इन्द्र के हृदय में सोम का डेरा है ।

कविः ६. १०६ १३

विश्वानि वृत्रा जघान ६. १०६. १४

वह सब प्रकार के धर्म्माच्छादक विघ्नों को मारता है ।

वीर वीर्य्याय चोदय ६ ११०. ७

हे वीर ! हमें वीरता के मार्ग पर चला ।

स्वायुधः ६ ११०. १२

ना नानं वाउ नो धियो विव्रतानि जनानाम् ६ ११२ १

जितने प्रकार के स्नातक गिनाये यह तो मुख्य मुख्य हैं अवान्तर भेदों का क्या ठिकाना ? एक बात सब सोमों में होनी चाहिये कि वह इन्द्र अर्थात् परमात्मा की ओर बहते हों ।

हमारी बुद्धियें अनेकविध हैं और व्रत भी भिन्न भिन्न हैं सब यथाशक्ति चलो ।

य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत् तमाहुः सुप्रजा इति ६. ११४. १

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसने इन्दु को उन सब अवस्थाओं में से ठीक ठीक यथाक्रम गुज़ारा है, जिन में से उसे गुज़रना चाहिये था समझो वही उत्तम सन्तान वाला है।

इस प्रकार मैंने दिखा दिया कि विचक्षण वधूयु, कवि, स्वायुध, वीर, युवा, मर्य, राजा, विप्र, विद्वान् आदि विशेषणों का सोम के लिए आना और उस पर भी एक वार नहीं बारम्वार आना और लगभग सूक्त सूक्त में आना इस बात का प्रमाण है कि सोम के समझने में कोई भूल अवश्य हुई है।

अब प्रश्न है कि हमने मान लिया कि विद्वान् आदि विशेषण उस के वृक्ष वा लता विशेषत्व का वारण करके उस के मनुष्यत्व की स्थापना करदें किन्तु उसके गुरुकुल से समावृत्त स्नातक होने मे क्या प्रमाण है?

इस के लिए हमें दो विशेषणों की ओर परीक्षक वर्ग का ध्यान खेंचना है।

(१) युवा

(२) वधूयु

इन में से भी वधूयु शब्द का चारों वेदों में सोम के अतिरिक्त और किसी का भी विशेषण न होना हमारे पक्ष को आश्चर्य जनक रूप से पुष्ट करता है। साथ ही यह बात भी कम ध्यान देने योग्य नहीं कि सोम को सम्बोधन करके अनेक स्थलों पर कहा गया है कि तू नवीनता ला तथापि पुरानों का रास्ता मत छोड़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः प्रत्नवद्रोचया रुचः
९. ९. ८

युवा और वधूयु के साथ मिलकर यह "नव्यसे नवीयसे" का भाव बात को बिलकुल स्पष्ट कर देता है।

अब प्रतिवादियों की ओर से प्रश्न किया जासकता है कि इस में "कलशे स्थितः" "धारया पवस्व" "द्रोणे स्थितः" आदि शब्द ऐसे हैं जो सोम का वनस्पति होना सिद्ध करते हैं।

उन से हमारा निवेदन है कि प्रथम तो इन विशेषणों से अधिक से अधिक यह सिद्ध होता है 'सोम' शब्द के दो अर्थ हैं ; जहां कवि आदि विशेषण हैं वहां स्नातक तथा जहां 'कलशे' स्थितः आदि शब्द हैं वहां सोम नामक औषधि। किन्तु हम दिखाएंगे कि कम से कम ऋग्वेद के नवम मण्डल में तो सोम शब्द ओषधि विशेष के लिये प्रयुक्त नहीं हुआ। "कलशे-स्थितः" आदि जिन शब्दों को ओषधि का सूचक समझा जाता है वहां उन के साथ ही दूसरे शब्द ऐसे पड़े हैं जो इस अर्थ का व्याघात करते हैं।

जो भी हो, कम से कम यह तो हो ही नहीं सकता कि यह कतिपय स्थानों में पड़े विशेषण विप्र कवि आदि पूर्वोल्लिखित विशेषणों की दुर्भेद्य विशाल अक्षौहिणी सेना को निगल जावें। अब हम क्रमशः प्रतिपक्ष के आधार भूत मन्त्रों को लेते हैं।

विपक्षियों के आधार भूत निम्न लिखित शब्द हैं।

धारया — धारा से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रोणानि द्रोण नामक बड़े बड़े बर्त्तनों में ।

सुतः—अर्क खींच कर निकाला हुआ।

कलशेषु आहितः — कलशों में रक्खा हुआ।

बभ्रुः—ख़ाकी रंग का।

पातवे—पीने के लिए।

वनस्पतिः—वृक्ष ।

हम इन में सब से पहिले धारा को लेते हैं। क्योंकि फिर उसके निर्णय होने पर कलशादि का भी निर्णय हो जायगा।

देखना चाहिये कि यह धारा किस पदार्थ की है?

ऋग्वेद कहता है हे सोम! तू हमें धारा से पवित्र कर। किन्तु वह धारा किस की है यह भी वेद ने स्वयं स्पष्ट कर दिया है

मं० ९ सू० ३३, १२ ऋतस्य धारया

अर्थात् ज्ञान की धारा से

सू० ६३. मं ४ १४. २१

सू० १०७. मं० ४

किन्तु प्रश्न हो सकता है कि ऋत शब्द तो सत्य तथा जल दोनों के नाम में आया है। फिर यहां जल धारा न लेकर ज्ञान की धारा क्यों लीजाय? इस के उत्तर में हमें यह कहना है कि इस मण्डल में ३१ वार कवि शब्द सोम का विशेषण होकर आया है; ५ वार विप्र शब्द आया है

१५ वार विचक्षण आया है।

२ वार विपश्चित् आया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ वार विद्वान् आया है।

फिर सू० ४४. मं० २ में "स्पृष्ट विप्रस्य धारया" अर्थात् मेधावी की धारा से ऐसा कहा गया है।

ऐसी अवस्था में वेद जव इस प्रकार घण्टा-घोष से बता रहा हो कि यह ऋत क्या है फिर यदि हम जल की धारा ऐसा अर्थ करें तो हमारी मूर्खता के अतिरिक्त क्या हो सकता है! अब देखना चाहिये कि विद्वान् ज्ञान की धारा किस कलश में बहाता है। इस के लिए कलश शब्द की व्युत्पत्ति को देखना चाहिये।

कल शब्द का अर्थ है मधुर शब्द। इसीलिए मधुर कण्ठ वालों को कलकण्ठ कहा जाता है।

"कलं मधुरं शब्दं शवंति गच्छति प्राप्नोतीति कलशः"

अर्थात् जो मधुर शब्द को प्राप्त हो। इसलिये कलश का अर्थ हुआ व्याख्यान मंडप या व्याख्यान वेदि। कहा जा सकता है कि कल का अर्थ तो मधुर अव्यक्त शब्द है। इस पर हमें कहना है कि इस में भी हमें कोई आपत्ति नहीं। इसका अर्थ है कि व्याख्यान-वेदि इस प्रकार बनानी चाहिये कि जिस से उस में ध्वनि मात्र मधुर होकर सुनाई दे और वह कलश के समान किञ्चित् गोलाई लिये हुई छत में ही हो सकती है। यह भी वेद ने व्यञ्जना से दिखा दिया। किन्तु जहां अव्यक्त ध्वनि मधुर हो वहां व्यक्त ध्वनि तो और भी मधुर होकर सुनाई देगी। इसलिए इस में कोई आपत्ति नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब देखना चाहिये कि द्रोण क्या है ?

द्रोण शब्द द्रु गतौ धातु से 'कृत्तृजृषि द्रु पन्यनिस्वपिभ्यो नित्' उणादि ३-१० इस सूत्र से 'न' होकर बना है। इसके शब्दकल्पद्रुम में इतने अर्थ दिये हैं:—

आढक परिमाण
अरणी काष्ठ
काष्ठनिर्मित कलश
द्रुममय रथ
द्रोणकाक अर्थात् एक प्रकार का कौवा
द्रोणाचार्य

इन में से अरणी, काष्ठमय कलश, और द्रुममय रथ यह तीन वैदिक हैं। दो सायण ने दिये हैं। तीसरा निरुक्त ५.२६ में यास्क ने दिया है।

हमारी समझ में तो रथ पक्ष में द्रुममय इस द्रविड प्राणायाम की भी आवश्यकता नहीं; सीधा 'द्रवतीति द्रोणः' भी रथ में अच्छी प्रकार सङ्गत हो जाता है। परन्तु भगवान् यास्क ने स्थूल दर्शियों के लिये द्रुम मय ऐसा अर्थ भी कर दिया प्रतीत होता है। अब प्रश्न होता है कि द्रोण का अर्थ यहां रथ क्यों न किया जाय ? इस बात के जानने से लाभ यह होगा कि बहुत से मन्त्रों का अर्थ स्पष्ट हो जायगा।

उदाहरण के लिये—

आ कलशेषु धावति. श्येनो वर्म विगाहते अभिद्रोणा कनिक्रदत् ॥ ६. ६७. १४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस मंत्र में सायण के भाष्यानुसार द्रोण शब्द बिलकुल व्यर्थ है और वर्म का अर्थ है घोंसला। जब सायण को प्रयोजन हो तब वर्म का अर्थ घोंसला भी होजाता है। यही अर्थ ऋषि दयानन्द ने किया होता तो सब के सब सायण के पक्षपाती चिल्ला उठते। बात यह है कि इस में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनों प्रकार के स्नातकों का वर्णन है। सोम अर्थात् स्नातक कितने प्रकार के हैं, सो यथापूजित क्रम से कहते हैं। सब से श्रेष्ठ ब्राह्मण हैं जो व्याख्यान मण्डप की ओर दौड़ते हैं अथवा प्रजा की शुद्धि करते हैं। दूसरे श्येन के समान क्षत्रिय हैं जो कवच का विगाहन करते हैं। तीसरे वैश्य जो रथ में चढ़ कर व्यापार के आक्रन्द अर्थात् चहल पहल करते हैं।

एक और लीजिए:—

परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्माव्यत ।
इन्दुरभि द्रुणा हितो हियानो धाराभिरक्षाः ॥

९. ९८. २

इस का सायण का अर्थ सुनिये। वह सूयमान सोम अर्थात् जब सोम का अर्क़ खींचते हैं तो वह सोम भेड़ के बालों के कम्बल को पवित्र करता है जैसे रथ में बैठा पुरुष कवच धारण करता है। और वह लकड़ी के कलश में पड़ा हुआ वह (हियानः) गति करता हुआ धाराओं से बरसता है। अब हमारा अर्थ भी सुनिये:—

वह क्षत्रिय स्नातक रथ पर चढ़ कर अभेद्य कवच धारण करता है और द्रुतगामी रथ से चारों ओर अर्थिजनों में धन की तरह शत्रुओं पर शरों की धाराएं बरसाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब एक तो यहां उपमा की कल्पना की, फिर सुवान कर्तृवाच्य का कर्म्मवाच्य बनाया। फिर भी वह अर्थ वृत्त में कठिनता से सङ्गत हुआ। 'पवते' जेब से डालना पड़ा और हियानः की सङ्गति नहीं बनी। दूसरी ओर हमें यह कुछ भी नहीं करना पड़ा। सो हमारा अपराध यही है कि हमारा अर्थ भद्दा नहीं है।

अब 'सुतः' को लीजिये:--

'सुतः' का सीधा अर्थ है जो खींचकर निकाला गया हो। हम पूछते हैं कि क्या स्नातक मनुष्यों का अर्क़ (essence) नहीं है, फिर वह सुन्वानः सुवानः और सुष्वाणः भी तो है।

१६ वार उसे सुवानः कहा गया है।

एक वार सुन्वानः कहा गया है:

तीन वार सुवानाः ऐसा बहुवचनान्त प्रयोग हुआ है।

तीन वार सुवानासः आया है।

तीन वार सुष्वाणः—आया है।

एक वार सुष्वाणासः—ऐसा बहुवचनान्त आया है।

इन सब को सायण ने कर्म्मवाच्य बना डाला है। इसका आधार क्या है कुछ नहीं बताया। सोम अर्क़ खिचवाता ही नहीं? खींचता भी है। दोनों गुण अलङ्कार रूप से चेतन में ही घटते हैं। वनस्पति का अर्क़ खींच तो सकते हैं परन्तु वह दूसरों का अर्क़ कैसे खींचेगा।

अब वनस्पति शब्द को लीजिए। यह १२ वें सूक्त में आया है किन्तु वहां विचक्षणः, सुक्रतुः, कविः, नित्यस्तोत्र,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धीनामन्तः सबर्दुघः, बुद्धि के अन्दर अमृत दुहने वाला विप्रस्य धारया हिन्वानः. मेधावी वाली धारा से संसार को प्रेरणा करता हुआ, फिर कविः इत्यादि इतने विशेषण ऐसे पड़े हैं कि बेचारे सायण को भी 'वनस्य पालयिता' वन का पालक ऐसा यौगिक अर्थ करना पड़ा। फिर भला हम क्या कहें?

अब रहा बभ्रु अर्थात् धूसर वर्ण। सो इस के लिये भी हम वेद का ही प्रमाण देंगे और वह भी ठीक ब्रह्मचारी के प्रसङ्ग का।

तानि कल्पद् ब्रह्मचारी सलिलस्य पृष्ठे तपोतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे। स स्नातो बभ्रुः पिङ्गलः पृथिव्यां बहु रोचते ॥

अथर्व ११ ५. २६।

इस का सायणकृत अर्थ सुनिये। सायण भाष्य में गणना क्रम से यह सप्तम सूक्त है।

स तपस्वी ब्रह्मचारी अनिशं स्नातः स्नानेन पवित्री कृतः बभ्रुः बभ्रुवर्णः। एतदेव विविच्यते पिङ्गल इति। पिङ्गल वर्णः सन् पृथिव्यां भूम्यां बहु अधिकं रोचते दीप्यते।

वह तपस्वी ब्रह्मचारी नित्यस्नान करके स्नान से पवित्र हुआ भूरे रङ्ग का (उसी की व्याख्या करते हैं पिङ्गल रङ्ग का) होता हुआ पृथिवी पर अतिशोभायमान होता है। यहां सायणने थोड़ी भूल की है। इसी लिये बभ्रु और पिङ्गल एक कर डाले हैं। बात यह है कि ब्रह्मचारी के शरीर पर भस्म है इस लिए बभ्रु है। शिर पर पिङ्गल जटा हैं इस लिए पिङ्गल है। वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब समावर्तन स्नान करता है, स्नातक बनता है तो पृथिवी पर बड़ा शोभा पाता है। इस में स्नातः शब्द का महत्व पता लगता है।

अब स्नातक के साथ बभ्रु का सम्बन्ध भी पता लग गया। शेष रहा पातवे; सो जब धारा का निर्णय होगया तो पीने की बात ही क्या है? कवियों की रसमयी वाग्धारा का पान रसिक-जन सदा ही करते हैं। अब जहां जहां यह शब्द आए हैं उन २ सूक्तों पर क्रमशः विचार करेंगे।

सब से पहिले प्रथम मन्त्र को ही लीजिये।

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया इन्द्राय पातवे सुतः।

किन्तु अगले ही मन्त्र में रक्षोहा और विश्वचर्षणिः दो विशेषण पड़े हैं। जिनका अर्थ है राक्षसों का हन्ता और विश्वदर्शी। रक्षोहा तो यथा कथञ्चित् वनस्पति में सङ्गत हो भी जावे, विश्वदर्शी किस प्रकार सङ्गत हो सकता है? इस लिये प्रथम मन्त्र का अर्थ वही होगा कि हे सोम! तू इन्द्र के रस पान कराने के लिये यद्वा दृशे विश्वाय सूर्यम् (यजु ७. ४१) में विश्वस्य दृशे के स्थान में विश्वाय दृशे है इसी प्रकार यहां इन्द्रस्य पातवे यह कर्मणि षष्ठी मान कर इन्द्र को अर्थात् परमात्मा को पान करने के लिये तू बना है। पर तू अकेला मत पी अपनी उस स्वादिष्ठ और मदिष्ठ धारा को हमें भी दे। जो भी हो, विश्वचर्षणि विशेषण लता तथा वृक्ष का नहीं हो सकता।

परमेश्वर परक अर्थ हमने दिग्दर्शन मात्र के लिये किया है। क्योंकि 'एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति' के अनुसार सोम नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमेश्वर का भी अवश्य है। किन्तु इस मण्डल में हम इसका अध्यात्म नहीं किन्तु अधि विराट् अथवा अधि-सामाजिक अर्थ दिखाएंगे।

दूसरे सूक्त में इस प्रकार है:—

अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः अपो वसिष्ट सुक्रतुः। ९. २. ३

मानव समाज के निष्कर्षभूत इस ज्ञान को सृष्टि के विधाता सोम की धाराएं मधु देती हैं, यह सुकर्मा इष्टसिद्धि प्राप्त करने वाली प्रजाओं को आच्छादन करता है। यहां वेधाः और सुक्रतुः वृक्षत्व के वारक हैं।

तीसरे सूक्त में फिर द्रोणानि आया है तथा सप्तम दशम मन्त्र में फिर दो वार धारया आया है। किन्तु साथ ही दीयति धावति रथर्यति शूरः पुरुव्रतः अर्थात् महाव्रत धारी इत्यादि यह विशेषण वृक्ष के नहीं हो सकते।

पञ्चम सूक्त के तृतीय मन्त्र में फिर धाराभिः आया है।
९. ५. ३

किन्तु इस सूक्त में ही सोम को पुरोयावा अर्थात् आगे चलने वाला तथा प्रजापति कहा है, यह यावा स्थावर के साथ मल्लयुद्ध करता है और स्थावर पछाड़ खाकर चित्त हो जाता है।

इससे अगले मन्त्र में कहा है, हे सोम! तू हरित वर्ण वनस्पति को संस्कृत कर। अब यदि सोम स्वयं वनस्पति है तो वह वनस्पति का संस्कार कैसे करेगा?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले सूक्त में १ तथा ७ मन्त्र में धारया आया है किन्तु साथ ही ३ मंत्र में सुवानः, ४ में पुनानाः, ८ में सुष्वाणः और २ में पुनानः कर्तृ वाच्य का प्रयोग आया है। सोम यदि लता हो तो सूयमाना पूयमाना तो हो सकती है, किन्तु सुवाना पुनाना कैसे होगी ?

७म सूक्त के द्वितीय मन्त्र में फिर धारा आया है किन्तु चतुर्थ मन्त्र में कवि विशेषण आया है। फिर उस के लिये कहा है स्पृधः अभिसीदति अर्थात् प्रतिस्पर्धियों के मुकावले पर डट जाता है। यह कवि तथा प्रतिस्पर्धि भयंकर दो विशेषण लता के कैसे होंगे ?

अष्टम सूक्त ६ष्ठ मंत्र में फिर "कलशेषु" पड़ा है, किन्तु साथ ही पुनानः भी पड़ा है । साथ ही उसे सम्बोधन करके यह भी कहा गया है—जहि विश्वा अपद्विषः (मंत्र ७)

अर्थात् तू शत्रुओं को मार। यह फिर प्रवुद्ध चेतन का धर्म्म है न कि स्थावर का।

११ वें सूक्त में फिर पातवे आया है किन्तु साथ ही मनसस्पति भी कहा है।

१२ के पांचवें मन्त्र में कलशेषु तथा सातवें में वनस्पति आया है, किन्तु उसके स्थान को "ऋतस्य सादने" (१) कहा गया है, धाराको "विप्रस्य धारया" (८)। चौथे मन्त्र में विचक्षण सुक्रतु और कवि कहा गया है और सब से मनोरञ्जक बात यह है कि यहां पञ्चम मन्त्र में दो सोम इकट्ठे होगये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यः सोम कलशेष्वां अन्तः पवित्र आहितः तमिन्दुः परिषस्वजे । ६. १२. ५

कलशों में जो सोम पड़ा है उसे दूसरा इन्दु आलिंगन करता है । अब जो सोम को वनस्पति मानते हैं वह क्या करेंगे? हमारा अर्थ तो स्पष्ट है कि स्नातक लोगों ने ऐसी उत्तम शिक्षा पाई है कि व्याख्यान मण्डप में पहुंच कर वह एक दूसरे को आलिङ्गन करते हैं। तभी तो वह सोम (essence of humanity) हैं। जहां किसी ने कोई चमत्कारी बात कही कि खिल उठे; दौड़ कर उसे आलिङ्गन कर लिया ।

१५ सूक्त में फिर द्रोणेषु आया है किन्तु यहां शूरः अण्व्या धिया याति (इत्थंभूत लक्षणे तृतीया) सूक्ष्म बुद्धियुक्त होकर विचरता है ऐसा कहा है । फिर उसे स्वायुध उत्तम शस्त्र-धारी भी कहा है । अतः द्रोणेषु का अर्थ रथेषु करना चाहिये ।

१६ वें के ७ वें मंत्र में धारया आया है, किन्तु चौथे मन्त्र में चेतसा आया है । फिर छटे में पुनानः शूरः सातवें में विपश्चित् ।

१७ वें के चतुर्थ मन्त्र में फिर कलशेषु आया है किन्तु रक्षांसि विघ्नन् राक्षसों का नाश करता हुआ सुवानः, भी कहा है ।

फिर यह भी कहा है कि विप्राः त्वां धीभिर्मृजन्ति (७) विद्वान् तुझे बुद्धि से मांजते हैं । इससे स्पष्ट है कि यह वृक्ष नहीं । फिर अष्टम मन्त्र तो और भी स्पष्ट है ।

मधोर्धारामनुक्षर तीव्रः सधस्थमासदः चारुर्ऋताय पीतये । ६.१७. ८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे सोम ! तू ज्ञान का पान कराने के लिये चतुर है। हे तीव्र बुद्धे ! तू व्याख्यान वेदि पर बैठ और मधु की धारा वरसा । बनस्पति पक्ष में तीव्र मधुर दोनों का इकट्ठा होना कुछ खटकता है।

१८ वें सूक्त में गिरिष्ठाः तथा कलशेषु दो पद फिर सन्देह जनक हैं। किन्तु सू ६२ मं० १५ में "गिरा जातः" वाणी से उत्पन्न हुआ अर्थात् सरस्वती का पुत्र यह विशेषण आया है। वस वही अर्थ यहां भी है "गिरि वाचि तिष्टतीति गिरिष्ठाः" जिसका आधार वाङ्मय है।

फिर मंत्र दो में "त्वं विप्रस्त्वं कविः" फिर चतुर्थ मंत्र में "वसूनि हस्तयोर्दधे।"

दोनों हाथों में ऐश्वर्य धारण करता है यह वाक्य पड़े हैं। अब अकेला कलशेषु क्या करेगा ? अर्थ करना होगा व्याख्यान-मण्डपेषु अर्थात् व्याख्यान मण्डपों में।

कुविद्वृषण्यन्तीभ्यः पुनानो गर्भमादधत् । याः शुक्रं दुहते पयः । ६. १६. ५

यह जो गति की कामना करने वाली कन्याएं उत्तम गर्भ धारण करती हैं और उजला दूध बच्चों को पिलाती हैं यह किसी सोम अर्थात् स्नातक का गर्भ है क्योंकि ब्रह्मचारी ही उत्तम गर्भ धारण करा सकता है।

टिप्पणी व्यर्थ है।

२० वें में 'चमूषु' पद आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका अर्थ सायण 'पात्रेषु' ऐसा करता है। परन्तु सूक्त में कवि विशेषण है 'साह्वान् विश्वा अभिस्पृधः' सम्पूर्ण प्रतिस्पर्धियों की चोट सहारने वाला ऐसा कहा है।

तीसरे मंत्र में कहा है।

परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मतीः।

तू सब बातों को मन से भली प्रकार सोचता है और फिर हमारी बुद्धियों को निर्मल करता है। इस अवस्था में चमूषु का अर्थ सीधा सेनासु क्यों न लें? चतुर सेनापति को जब कर्तव्य न सूझे, उस समय भी शान्त मन से मार्ग सुझा कर मति को निर्मल करता है। अथवा यदि कवि विशेषण के आधार पर चलना हो तो 'विवादसभासु' ऐसा ले सकते हैं। परन्तु पात्रेषु यहां कैसे घटेगा सो सायण ही जाने।

२३ सूक्त में फिर धारया आया है, परन्तु उसी मंत्र में अभिविश्वानि काव्या भी आया है। फिर सुवीर आया है। इस से स्पष्ट है कि यह वीर रसके काव्य की धारा है। इसीलिये अन्तिम मंत्र में कहा है:—

अस्य पीत्वा मदानामिन्द्रो वृत्राण्यप्रति जघान जघनच्च नु।

इस वीर कवि के काव्य रस को पीकर राजा शत्रुओं के सामने जाता है, उन्हें मारता है और मारे चला जाता है।

वृत्त काव्य-रचना करने सायण के घर में आते होंगे!

२५ सूक्त में फिर धारया है। किन्तु इस में तृतीय में सोम को कवि कहा है। षष्ठ में धारया कवे! ऐसा कहा है। वृत्त कवि कैसे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२८ सूक्त में द्रोणानि पड़ा है परन्तु साथ ही विश्ववित् मनसस्पति भी पड़ा है इसलिये द्रोण का अर्थ कलश न होकर रथ होगा।

२६ वें सूक्त में फिर धारया है किन्तु साथ ही विश्वा-वसूनि सञ्जयन् (४) सब धनों को विजय करता हुआ, यह विशेषण भी है वृक्ष फिर भी नहीं।

३० में फिर धाराः और द्रोणानि है परन्तु साथ "वाचस्पु-नानः" वाणी को पवित्र करता हुआ, यह विशेषण भी पड़ा है।

३१ के ५ वें मन्त्र में सोम को बभ्रो कहा है, किन्तु ६ ठे मन्त्र में स्वायुधः भी साथ ही कहा है।

३३ में फिर द्रोणानि तथा बभ्रवः आया है, किन्तु साथ ही विपश्चितः तथा ऋतस्य धारया भी पड़ा है अर्थात् विद्वान बभ्रु सोम ज्ञान की धारा से बल दान करते हैं।

३५ में धारया पड़ा है किन्तु साथ ही रायो धर्मा न ओजसा (२) ओज से हमारे धनकी रक्षा करने वाला। व्रता विद्वान आयुधा (४) व्रत और शास्त्र दो बातों का जानने वाला धर्म्मणस्पति (५) भी कहा है।

४१ में फिर धारया है। किन्तु साथ ही अन्तः कृष्णा-मपत्वचम् (१) चरन्ति (३) भी आया है अर्थात् सोम अन्ध-कार का नाश करते हुए विचरते हैं।

४२ में धारया (२) फिर आया है। किन्तु साथ ही "प्रत्नेन मन्मना" चिरन्तन विचार से यह पवित्र करता है, यह भी आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४४ में धारया फिर है। किन्तु विप्रस्य धारया कविः अर्थात् यह कवि विद्वानों वाली धारा से जगत् को प्रेरणा करता है, यह भी पड़ा है ।

४५ में फिर धारया आया है किन्तु विचक्षसे भी साथ ही है। अर्थात् तू शास्त्रों की व्याख्या करता है।

४६ सूक्त में आया है कि "गोभिः श्रीणीत मत्सरम्।" (४) इस पर सायण कहता है इस सोम को 'गोभिः' अर्थात् गौ के दूध आदि से सुसंस्कृत करो। किन्तु गोभिः' का अर्थ वाणीभिः ऐसा होना चाहिए। क्योंकि तीन सूक्त पहले ४३ सूक्त में ही सोम को 'गीर्भिः परिष्कृत' वाणी द्वारा संस्कृत कहा गया है। तथा यह भी कहा गया है तं गीर्भिर्वासियामसि। इस सोम को हम उत्तम वाणी से सुवासित करें। फिर गोभिः का अर्थ गीर्भिः न कर के पय आदिभिः करना कितनी मूर्खता है। फिर इस सूक्त में वही परिष्कृतासः (२) शब्द दोहराया गया है। फिर यह भी कहा गया है 'इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः' सोम अपने शुभ कर्मों से राजा की वृद्धि करते हैं।

४७ सूक में फिर धारया' है। किन्तु साथ ही 'रक्षांस्यपजङ्घनत्' राक्षसों को मारता हुआ यह भी आया है।

५० में फिर धारया है। किन्तु साथ ही कवे! भी है।

५७ में फिर धाराः है। किन्तु साथ ही 'प्रियाणि काव्या-विश्वा चक्षाणः' समस्त प्रिय काव्यों का व्याख्यान करता हुआ, यह विशेषण भी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६१ में फिर 'धारया' है । किन्तु साथ ही उसे 'व्रतेषु जागृहि (२४) ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति (३०) तू सदा अपने कर्त्तव्यों में जागरूक रह । तेरे तीव्र तथा भयङ्कर शस्त्र हैं । ऐसा भी कहा है ।

६२ में फिर धारा तथा आविशन् कलशं (१९) यह पद आए हैं परन्तु साथ ही कविः (१०) गिरा जातः (१५) वाचो अग्रियः (२५) साहित्यक्षेत्र का नेता विश्वमेजय (२६) धरती कंपाने वाला अथवा धरती कंपादे । ऋतः कविः (३०) कवे (२७) भी कहा है ।

६३ सूक्त में चमूषु, कलशे, बभ्रवः, धारया चारों पड़े हैं किन्तु साथ ही ऋतस्य धारया (४ १४ २१) अतिह्वरासि (कुटिलता रहित) कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् (५) संसार को आर्य्य बनाते हुए आर्य्या धामान्यक्षरेन् आर्य्य धाम देते हैं । (१४) क्रतुविद् (२४) विश्वानि काव्या असृक्षत, समस्त काव्यों को रचते हैं, यह पद भी पड़े हैं ।

६४ में फिर धारया है किन्तु प्रियः कवीनाम् चेतनः । चेतन कवियों का प्यारा (१०) क्रवे (२४) कविः (३०) यह विशेषण भी पड़े हैं ।

६५ वें सूक्त में धारया (१०, १२) कलशा (१४) द्रोणानि (१९) शब्द आये हैं ।

किन्तु साथ ही स्वायुध (५) गातुवित् अर्थात् यज्ञवेत्ता राजा (१६) विप्र (२९) शब्द भी उसी के विशेषण हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६६ में फिर धारया (७) शब्द आया है किन्तु साथ ही विश्वचर्षणे विश्वानि काव्या पवस्व । हे विश्वदर्शिन्! सब काव्यों को पवित्र कर (१)

कवे (१०)

युध्वा (ओजीयान्, शूरतर, मंहीयान् (अतिदानशील) (१७) ऋषि, पुरोहित (२०) विचक्षण (२३) भी कहा गया है।

(६७) कलशेषु (१४) कलशे (१५) फिर आया है। द्रोण के साथ ही विचर्षणिः (दूरदर्शी २२) युवानमाहुतीवृधम् (२६) आहुतियों की वृद्धि करने वाला नौजवान भी कहा गया है।

"ब्रह्म सवैः पुनीहि नः" तू हमें ब्राह्मणोचित कर्म्मों से पवित्र कर।

५ मंत्र में कहा है:—

सं दक्षेण मनासा जायते कविर्ऋतस्य गर्भः।

यह ज्ञान का गर्भ रूप विद्वान् चतुर विचार शक्ति से उत्पन्न होता है।

७२ सूक्त में फिर कलशे (१) आया है किन्तु साथ ही कहा है "उद्वाचमीरयति" वह उत्तमवाणी बोलता है।

दुहन्ति कविं कवयः (६) इस कवि की बात कवि समझते हैं।

७४ सूक्त में फिर कलशं (८) आया है परन्तु कविः (२) भी आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

७५ में कलशां (३) पद आया है। साथ ही विचक्षणः (१) प्रियं वक्ता धियः पतिः (२) भी आया है ।

८० में सोमस्य धारा (१) आया है किन्तु साथ ही ऊर्जं वसानः श्रवसे सुमङ्गलः तेज धारण करने वाला यशस्वी मङ्गल-मय यह भी कहा गया है ।

८१ में कलशान् (२) आया है किन्तु उसी मन्त्र में विद्वान् पद भी पड़ा है। साथ ही उस से प्रार्थना की गई है 'शिक्षा' (३) अर्थात् हमें शिक्षा दे।

८४ में धारया (३) कलशेषु (४) दो पद आए हैं। किन्तु साथ ही वाचं हिन्वानः वाणी को प्रेरणा करने वाला धनञ्जय, विप्र, कविः (५) भी कहा है।

८५ के पञ्चम तथा दशम मन्त्र में कलशे आया है। विचक्षणः कविः (९) भी कहा है ।

८६ सूक्त में कलश का वर्णन (६. ९. ११. १६. १९. २२. ३५. ४७.) आठ स्थानों आया है,

किन्तु साथ ही स्वायुधः (१२) वृषा मतीनां विचक्षणः सुबुद्धि वर्षी विद्वान् मतिभिः परिष्कृतम् (२४) कविम् (२५) विश्ववित् कवे (२९) विचक्षण (३५) नृचक्षाः मनुष्य परीक्षक (३८) सुवीरः विश्ववित् (३९) क्रतुवित् (४८) भी कहा गया है।

९२ के छठे मंत्र में कलशान् आया है किन्तु नृचक्षाः कविः (२) मनुष्य परीक्षक विद्वान् भी आया है । तीसरा मन्त्र सुनिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्र सुमेधा गातु विद् विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम्
भुवद्विश्वेषु काव्येषु रन्तानुजनान् यतते पञ्च धीरः ९. ९२. ३

उत्तम बुद्धिशाली मार्गवित् संसार भर का देवता सोम नित्य सभा में आता है। यह सब प्रकार की विद्याओं में रमण करता हुआ धीर निषाद वर्ण तक सारी प्रजा का कल्याण करता है।

फिर जहां मं० ९ में कलशान् आया है उसे ही देखियेः—

राजा न सत्यः समितीरियानः कलशां अयासीत्।

जिस प्रकार निष्पक्षपात सत्याचरण करने वाला राजा सभा में जाता है उसी प्रकार सोम व्याख्यान मण्डपों में जाता है।

द्रोणं (१) कलशे (२) चमूषु (३) शब्द आए हैं साथ ही सुमेधाः (३) भी आया।

(९. १४. २२. २३)

९६ में कलशे आया है परन्तु साथ ही सेनानी (१) ब्रह्मादेवानाम् पदवीः (आदर्शः) कवीनाम्, ऋषिर्विप्राणाम् यह पद भी आए हैं। उससे कहा गया है जनयायुधानि ; नए नए प्रकार के शस्त्र पैदा कर (१२) स्वायुधः (१६) ऋषिमनाः ऋषिकृत्, ऋषियों के समान बुद्धिवाला, ऋषि बनाने वाला (१८) आयुधानि बिभ्रत्, शस्त्रधारी (१९, सामन्यो, विपश्चित् साम कृण्वन् कलशान् आविवेश (२२) सङ्गीतज्ञ विद्वान् सङ्गीत रचना करता हुआ कलशों में प्रवेश करता है। अब कहिये यहां कलश का अर्थ व्याख्यान मण्डप के अतिरिक्त क्या हो सकता है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

९७ सूक्त में फिर चतुर्थ, वाईस तथा तेतीस मन्त्रों में कलश शब्द आया है किन्तु साथ ही :—

भद्रा वस्त्रा वसानः, महान् , कविः उत्तमवस्त्र धारी महाकवि विचक्षण जागृवि (२)

पस्त्यावान मर्यः दुर्गृहस्थ मनुष्य (८) जागृवि, विप्र (३७) विश्ववित् मनीषी (५६) यह शब्द भी आए हैं।

१०० वें सूक्त में धारा तथा धारया (४५.६) शब्द आए हैं। साथ ही उस से कहा गया है 'धियं नमन्तो युजमूसृज' (३) मन को एकाग्र करते वाले कर्म कर। कवे (५) महिव्रत (१) शब्द भी साथ में आए हैं।

१०१ सूक्त में फिर धारया (२) आया है किन्तु साथ ही वाचस्पतिः कृण्वते पथः (८) मार्ग बनाते हैं विपश्चितः (१२) वीरः (१५) यह विशेषण भी हैं।

१०६ सूक्त में फिर धाराभिः, कलशं (७) कलशान् (१२) शब्द आए हैं परन्तु साथ हीः—

जागृविः सदा जागरूक (४) विश्वदर्शनः लोकदर्शनीय पथिकृत् विचक्षणः (५) वाचं जनयन् उत्तम वाणी उत्पन्न करता हुआ (१२) यह शब्द भी पड़े हैं।

१०७ सूक्त में फिर धारया (८) आया है किन्तु साथ ही चार बार उसे विचक्षण भी कहा है। (३.५ ७ १६) ऋषिः, विप्रः, कविः (७) विप्रः जागृविः १६ (६) कहा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार हमने देख लिया कि जहां जहां कलशादि शब्द हैं वहां २ उनके पात्र विशेषत्व को निराकारण करने वाले शब्द भी पड़े हैं दूसरी ओर वधूयु, युवा आदि शब्दों का व्यावर्त्तक कुछ नहीं।

कहा जा सकता है कि सोम को अमर्त्यः (९. ३ १) कहा गया है उसके उत्तर में मर्यः (९. ९७. १८) भी दिखा दिया गया है। मरणधर्म्मा अपने यश से अमर होजाते हैं इस में क्या आश्चर्य्य है? जब सोम को कवि कहा गया है तो फिर इस में अनुचित ही क्या है क्यों न कहें?

जयन्ति ते सुकृतिनो रस सिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति येषां यशः काये जरामरणजंभयम्॥

इस विषय में अधिक विचार देवों के मर्त्यत्व तथा अमृतत्व विषय में करेंगे। यहां हमने अपने पक्ष की स्थापना भी कर दी और विरोधि पक्ष का निरास भी कर दिया। अब स्पष्ट है कि साम नाम विद्या समाप्त करने वाले ब्रह्मचारी का है चाहे वह वधूयु हो वा नैष्ठिक भाव से सन्यास लेले परन्तु वह मुख्य रूपेण वधूयु तथा युवा है यही बात 'सोमो वधूयुरभवत्' (अथर्व० १४ काण्ड) तथा ऋक् (१०. ८५) में भी कही गई है।

इस तत्व को न समझ कर पौराणिक भाष्यकार सब जगह बूटी ही रगड़ते रहे हैं। हमारा तात्पर्य्य यह नहीं कि चारों वेदों में सोम नाम से सोमलता का वर्णन कहीं नहीं। हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तात्पर्य तो केवल इतना है कि इस शब्द का व्यवहार प्राधान्येन स्नातक के लिए ही हुआ है; जो कविः, वधूयुः, युवा, विप्रः आदि शब्दों से विदित होता है। हां, जहां चिकित्सा-प्रकरण हो वहां सोमलता अर्थ भी करना उचित है।

इसीलिये वेद ने कहा है—

सोमं मन्यते पपिवान् यत् संपिषन्त्योषधिम्।
सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति कश्चन॥

१०. ८५. ३

भला देखो, इस सोम नामक ओषधि को पीस कर समझता है कि सोम पी बैठा हूं। अरे भोले! जिस सोम का तत्व ब्राह्मण जानते हैं उसको इस प्रकार समझने वाला कोई स्थूल-दर्शी नहीं पाता॥

इति शम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकाशक—मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी।
मुद्रक—म० गंगाराम पाठक गुरुकुल प्रैस, कनखल।

१०००--११--८८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar